सरल हिनदी

# भागवद गीता

## अधयाय-01

## अरजुन विषाद योग।

**सापताहिक पाठ-1/1.01 धरितराषटर ने कहा:**
कुरुकशेतर की धरम-भूमि पर, लड़ने को अेकतरित हो,
संजय, मेरे और पांडु के पुतरों ने कया किया? कहो.

**1.02 संजय ने कहा:**
सजी पांडवों की सेना थी, वयूह रचित अुस को पाकर,
दुरयोधन ने कहा दरोण गुरु से, अुन के सममुख जाकर.

**1.03**
हे आचारय! पांडु पुतरों की सेना सजी हुअी देखो.
शिषय आप के धरिषटदयुमन ने किया अैसे वयूहित, देखो.

**1.04**
भीम और अरजुन जैसे हैं शूरवीर योदधा, ख़ूंख़वार,
महारथी युयुधान, विराट, दरुपद भी लड़ने को तैयार.

**1.05**
धरिषटकेतु है, चेकितान है, और वीर है काशीराज,
कुनतिभोज है, पुरुजित भी है, और शैवय भी है नरराज.

**1.06**
युधामनयु, अभिमनयु, अुततमौजा, सारे हैं वीर बड़े,
महारथी, दरौपदी, सुभदरा, दोनों के सब पुतर खड़े.

**1.07**
हे आचारय! आप सुनिये अब हाल हमारी सेना का,
अिस में भी हैं वीर बहुत, मैं नाम बताता हूं अुन का.

**1.08**
आप, पितामह भीषम, विजेता करिप, महान योदधा है करण,
सोमदतत का पुतर और अशवतथामा के साथ विकरण.

**1.09**
अनय बहुत से शूरवीर, सब ने मुझ पर हैं पराण दिये,
लड़ने को तैयार खड़े हैं, रणशसतरों को साथ लिये.

**1.10**
अपनी जो अपार सेना है, अुस के रकशक भीषम बने,
सीमित पांडव-सेना, अुस के रकशक योदधा भीम बने.

**1.11**
आप सभी अपनी-अपनी जगहों पर ही जम कर रहना,
धयान भीषम की रकशा का, जैसे भी हो वैसे करना.

**1.12**

आननदीत करने राजा को, भीषम ने जय-जयकार कीया,
शंख बजाया और गरज कर सींह की तरह नाद कीया.

**1.13**

शंख, नगाड़े, ढोल, भेरीयां, बजने लगे वहां सब ओर,
बजे युदध के सारे बाजे, होने लगा भयंकर शोर.

**1.14**

करीषण और अरजुन, सफ़ेद घोड़ों के रथ पर वहां चढ़े,
बजा रहे वे दीवय शंख, दोनों आगे की ओर बढ़े.

**1.15**

पाञचजनय था शंख करीषण का, देवदतत अरजुन का शंख,
नाद भयंकर करने वाला, पौंडर महान भीम का शंख.

**1.16**

कुनतीपुतर युधीषठीर का था अनंतवीजय नाम का शंख,
मणीपुषपक सहदेव का तथा बजा नकुल का सुघोष शंख.

**1.17**

काशीराज धनुरधारी का, बजा शीखंडी का भी शंख,
महारथी धरीषटदयुमन, वीराट, सातयकी अजेय के भी शंख.

**1.18**

दरुपद, दरौपदी के पुतरों के साथ वीर अभीमनयु खड़े,
चारों ओर बहादुर अपने शंख बजाकर गरज पड़े.

**1.19**

शंख नाद से धरती और आकाश वहां गूंजने लगे,
जीस को सुन कर कौरव दल के हरीदय बहुत कांपने लगे.

**सापताहीक पाठ-2/1.20**

घोर नाद के बीच, वीर अरजुन ने अपना धनुष लीया,
देख कौरवों की सुवयवसथीत सेना, शरी करीषण से कहा.

**1.21 अरजुन ने कहा:**

हे योगेशवर ! करीपा कीजीये, बढ़ाईये मेरे रथ को,
तुरंत दोनों सेनाओं के बीच खड़ा कर दो ईस को.

**1.22**

मुझे ले चलो वहां, जहां पर सब योदधा ततपर रण को,
जीन के साथ मुझे लड़ना है, देख सकूं मैं उन सब को.

**1.23**

देखूं मैं उन सब को जो हैं लड़ने को तैयार हुये,
दुषट बुदधी वाले दुरयोधन के कहने पर अड़े हुये.

**1.24 संजय ने कहा:**

हे धरितराषटर! करिषण ने जब अरजुन के अैसे शबद सुने,
रथ को दोनों सेनाओं के बीच कर दीया तब अुस ने.

**1.25**

कहा करिषण ने, भीषम, दरोण सब राजा थे मौजूद जहां,
अरजुन, सब कुरुओं को देखो, अेकतरित वे हुये यहां.

**1.26**

दोनों सेना खड़ी हुअी थीं, अरजुन ने अुन को देखा,
पुतर, गुरू, मामा, भाअी, दादा व पौतर सब को देखा.

**1.27**

अुन दोनों सेनाओं में थे, शवसुर और मितर भी खड़े,
अरजुन के सामने वहां थे, युदध-भूमि के दरिशय बड़े.

**सापताहिक पाठ-3/1.28**

दया आ गअी अरजुन को, वह अुदास, मन अुस का डोला,
युदध भूमि पर, वीकलित हो कर, योगेशवर से यूं बोला.

**1.29 अरजुन ने कहा:**

मेरे अंग हो रहे ढीले, मुंह भी मेरा सूख रहा,
खड़े रोंगटे सारे, मेरा शरीर थर-थर कांप रहा.

**1.30**

गीरता है गाणडीव हाथ से, तन सारा जलता जाता,
मन मेरा हो रहा भरमीत, अब खड़ा नहीं मैं हो पाता.

**1.31**

योगेशवर, मैं देख रहा अपशकुन और लकशण वीपरीत,
नहीं दीखती कलयाणी, समबनधी-बध करने की रीत.

**1.32**

नहीं राजय या सुख की अीचछा, मुझे वीजय की चाह नहीं,
सीरफ़ राजय, सुख, वीजय ही नहीं, जीवन की परवाह नहीं.

**1.33**

जीन के लीये राजय, सुख भोग चाहते थे, वे खड़े यहीं,
सब ने तयागा मोह पराण का, धन का भी कुछ मोह नहीं.

**1.34**

बूढ़े दादा, पीता, पुतर, मामा के संग आचारय बड़े,
परीयगण, साले, शवसुर और समबनधी सारे यहां खड़े.

**1.35**

तीन लोक का राजय मीले, तो भी न कभी अीन को मारूं,
फीर कया बात अीस जगत की, मैं मर जाअूं, न अीनहें मारूं.

**1.36**

अीनहें मार कर, हे योगेशवर! पायेंगे हम बस सनताप,

अिन को मार दिया हम ने तो निशचय हमें लगेगा पाप.

**1.37**

ये कौरव समबनधी, अिन का बध करना है अुचित नहीं,
मार अिनहें, हे करिषण! मिलेगा सुख हम को कया कभी कहीं?

**1.38**

ये अंधे, लोभी हैं, अिनहें नहीं दिखाअी देता आप,
कुल-विनाश या मितर-दरोह का, अिन को नहीं दीखता पाप.

**1.39**

जब हम को है दीख रहा, कुल के विनाश का कया अंजाम,
हमें चाहिये, दूर पाप से रहें, ना करें अैसा काम.

**1.40**

कुल-विनाश से सभी पुराने धरम नषट हो जाते हैं,
जिस से परिवारों में कितने ही अधरम बढ़ जाते हैं.

**1.41**

अधरम बढ़ने से कुल की नारियां भरषट हो जाती हैं,
भरषट नारियों से वरणों में संकरतायें आती हैं.

**1.42**

वरणों की संकरता, परिवार को नरक में पहुंचाती,
अनन और जल से पुरखों की आतमा वंचित रह जाती.

**1.43**

होते हैं परिवार नषट, जब संकरता बढ़ जाती है.
जाति-धरम, कुल-धरम बिगड़ते, मरयादा मिट जाती है.

**1.44**

हे योगेशवर! जिस कुल के सब धरम नषट हो जाते हैं,
कहते हैं, अुस के लोगों को सिरफ़ नरक में पाते हैं.

**1.45**

देखो, हम तैयार, बहुत ही बड़ा पाप यह करने को,
राजय-लोभ के कारण, अपने लोगों का बध करने को.

**1.46**

यदि कौरव ले शसतर, मार दें मुझे, सहूंगा मैं अुस को,
बिना लड़े मारा जाअूं, कुछ हानि नहीं होगी मुझ को.

**1.47**

छोड़ा धनुष, बाण अरजुन ने, युदध समय अैसा कहकर,
वयाकुल बहुत हुआ दुख से, वह बैठ गया अपने रथ पर.

**अधयाय-02**

**सांख्य योग।**

**साप्ताहिक पाठ-4/2.01 संजय ने कहा:**
अर्जुन की दयनीय दशा, आंखों में आंसू दीख रहे,
दुखी बहुत वह, योगेश्वर ने, तब उस से ये शब्द कहे.

**2.02 योगेश्वर ने कहा:**
युद्ध समय कैसे, हे अर्जुन! यह सम्मोह हुआ तुझ को?
स्वर्ग नहीं पायेगा, अपयश भी जग में होगा तुझ को.

**2.03**
शोभा देता नहीं तुझे यह, नामर्दी की बात करे,
दुर्बलता को त्याग, उचित है, दुश्मन के संग युद्ध करे.

**2.04 अर्जुन ने कहा:**
हे योगेश्वर! भीष्म, द्रोण पर बाण चलाऊं मैं कैसे?
पूजनीय हैं वे, उन के ऊपर मैं वार करूं कैसे?

**2.05**
गुरु-हत्या से बेहतर है, मैं भीख मांग कर खाऊंगा,
होंगे सने ख़ून से वे सुख, जिन्हें जीत कर पाऊंगा.

**2.06**
ग्यात नहीं क्या उचित, वही जीतें या हम जीतें उन को,
उन के मरने पर न रहेगी, जीने की इच्छा हम को.

**2.07**
अपनी दुर्बलता के कारण, समझ खो रहा बेबस हूं,
क्या है उचित? बताओ, अब मैं शिष्य तुम्हीं पर आश्रित हूं.

**2.08**
मिले सम्पदा सब जगती की, राज मिले या स्वर्गों का,
नहीं करेगा दूर शोक, जो नाशक मेरी इन्द्रियों का.

**2.09 संजय ने कहा:**
इन शब्दों को कह विकलित था, पराक्रमी अर्जुन रथ पर,
'नहीं करूंगा युद्ध' और फिर शान्त हो गया यह कहकर.

**साप्ताहिक पाठ-5/2.10**
हाल बुरा था अर्जुन का, पर योगेश्वर मुस्करा रहे,
सेनाओं के बीच खड़े हो, अर्जुन से ये वचन कहे.

**2.11 योगेश्वर ने कहा:**
जिसका शोक विफल, उस का तू शोक करे? है अग्यानी,
जीवन और मरण दोनों से, डरते नहीं कभी ग्यानी.

**2.12**
मैं, तू और अन्य ये राजा, पहले थे मौजूद सभी,
आगे भी सब यहीं रहेंगे, हो न सकेंगे नष्ट कभी.

**2.13**
बचपन, यौवन और बुढ़ापा, जैसे जीवन में आते,

वैसे आतमा देह बदलती, कयों अिस से फिर घबराते?

**2.14**

शीत-गरम, सुख-दुख के अनुभव, अिनदरि भोग से होते हैं,
आते हैं, जाते हैं, ये तो पल, दो पल ही रहते हैं.

**2.15**

शरेषठ वही पराणी, सुख, दुख से िनिशचत िवकल नहीं होता,
िजस को दोनों सम हैं, अुसमें मोकश परापित का बल होता.

**2.16**

असतय का असितितव नहीं है, सतय सदैव यहां रहता,
गयानी के आगे दोनों का असली रूप बना रहता.

**2.17**

िजस से फैला है जग सारा, अिवनाशी अुस को जानो,
हो सकता िवनाश अिवनाशी का, अिस को मत सच मानो.

**2.18**

कहते हैं आतमा को अकशय, देह मरे पर यह न मरे,
हे अरजुन! जब मरती है बस देह, कयों न तू युदध करे?

**2.19**

जो सोचे, यह आतमा मर जाती या कभी मारती है,
समझो है अनजान, नहीं मरती आतमा न मारती है.

**2.20**

जनमे नहीं, न मरे कहीं, अिस का असितितव सदा रहता,
आतमा सदा अजनमी, शाशवत, शरीर ही केवल मरता.

**2.21**

जो यह जाने, आतमा रहती सदैव, मरती नहीं कभी,
कैसे मार सके वह औरों को या मरे िकसी से भी?

**2.22**

तयाग पुराने कपड़े, जैसे तन पहने पोशाक नअी,
छोड़ पुरानी देह, जीव भी पा लेता है देह नअी.

**2.23**

आतमा कटती नहीं शसतर से, नहीं आग से वह जलती,
वायु सुखाती नहीं अुसे, वह जल से कभी नहीं गलती.

**2.24**

आतमा कटती नहीं, न जलती, गलती या सूखती नहीं,
यह अनंत, यह सरववयापत है, िनशचल रहती सदा यहीं.

**2.25**

अिसे अवयकत, अिचनतनीय कहते, अिवकारय अिसे कहते,
अिस को सही समझने वाले, कोअी शोक नहीं करते.

**2.26**

यिद समझे, यह आतमा लेती जनम और फिर मर जाती,

तो भी, अरजुन, तुझे शोक करने की बात नहीं भाती.

**2.27**

जो पैदा होता वह मरता, मर कर लेता जनम कहीं,
जिस को गयात, बात यह निशचय, चिनता होती उसे नहीं.

**2.28**

परगट नहीं होता कोई भी, जब तक लेता जनम नहीं,
होकर परगट, अंत आने पर, हो जाता है लुपत कहीं.

**2.29**

आतमा से आशचरय सभी को, सब इस से हैं चकराते,
कुछ भटके, कुछ दूर बहुत, वे इस को समझ नहीं पाते.

**2.30**

सभी देह में वास करे, यह आतमा अविनाशी होती,
शोक न कर, इस की रकशा तो अपने आप यहां होती.

**सापताहिक पाठ-6/2.31**

अपने करतवयों का धयान करे, तो भी हो विकल नहीं,
धरम-युदध से बड़ा और कशतरिय का कोई धरम नहीं.

**2.32**

तैयारी युदध के लिये, जैसे हो खुला सवरग का दवार,
कशतरिय को मोकश का सुअवसर मिलता है बस इसी परकार.

**2.33**

धरम-युदध के समय, अगर रण से पीछे हट जायेगा,
अपयश फैलेगा दुनिया में, तुझे पाप लग जायेगा.

**2.34**

बदनामी होगी, इस की चरचा भी सदा यहां होगी,
बदनामी, इजजत वाले को, बुरी मौत से भी होगी.

**2.35**

डर के कारण हटा युदध से, सब योदधा यह समझेंगे,
जिन लोगों में मान बड़ा, वे ही तुझ को ताना देंगे.

**2.36**

शतरु तेरे बल की निनदा कर, बोलेंगे अनकहनी बात,
इस से बड़ी और कया हो सकती है तुझ को दुख की बात?

**2.37**

जीतेगा तो राजय मिलेगा, सवरग मिलेगा मरने पर,
उठकर हो तैयार, युदध कर, अरजुन, तू अब देर न कर.

**2.38**

सुख-दुख, लाभ-हानि, जय और पराजय हैं सब एक समान,
ऐसे समझ कर युदध करे तो पाप न होगा, यह सच मान.

**सापताहिक पाठ-7/2.39**

यह तो गयान सांखय का था, अरजुन, सुन गयान योग का अब,

अिसे जान कर टूट जायें, तेरे करमों के बनधन सब.

**2.40**

अिस मारग के परयास सफल, सब बाधा दूर रहें अिस से,
थोड़ा सा पालन करने से, भारी भय मीटते अिस से.

**2.41**

हे अरजुन! अिस में होती है, बुदधी अिरादे वाली अेक,
जो न अिरादा हो तो फट कर, हो जाती है बुदधी अनेक.

**2.42**

अगयानी, वेदों को पढ़, कामना सवरग की करते हैं,
अिस से आगे नहीं और कुछ, यही हमेशा कहते हैं.

**2.43**

करम-कांड वे करते रहते, सुख भोगेंगे, अिसी लीये,
मीठी बातें करते, वे लालसा शकती की सदा कीये.

**2.44**

लगे रहें नीत भोगों में, या पाने को अैशवरय कहीं,
वे कमज़ोर बुदधी के, अुन को समाधी का कुछ गयान नहीं.

**2.45**

वेद तीन गुण पर आधारीत, सवतनतर गुण से हो जा तू,
तयाग कामनायें पाने की, बरहम परापती में लग जा तू.

**2.46**

सागर पा लेने पर जैसे, सरवर का अुपयोग नहीं,
बरहमलीन गयानी को वैसे, वेदों का कुछ लोभ नहीं.

**2.47**

है अधीकार करम करने का, फल का है अधीकार नहीं,
करम-फलों की अिचछा वैसे, जैसे करम न करो कहीं.

**2.48**

सीदधी, असीदधी; सफलता या असफलता से मत रखो लगाव,
नीतय सनतुलीत करम करो तुम, योग अेक समता का भाव.

**2.49**

बुदधी योग है शरेषठ, जहां बीन फल-अिचछा के करम करे,
हालत अुसकी दीन, अगर वह फल की भी कामना करे.

**2.50**

बुदधी लगाकर करम करो तो पाप-पुनय नहीं लगता है,
करम, बुदधी से करो, योग का मतलब करम-कुशलता है.

**2.51**

गयानी जन जो बुदधी लगाकर, करम फलों का तयाग करे,
मुकत जनम बनधन से होकर, सुखी दशा को परापत करे.

**2.52**

जब यह बुदधी मोह का गनदा ताल पार कर जायेगी,

अभी सुना, जो सुनना, सब से वैरागी हो जायेगी.

**2.53**

शरुती से भरानत बुदधी तेरी, जब अवीचल हो जायेगा तू,
योग-युकत होकर समाधी में, नीशचलता पायेगा तू.

**सापताहीक पाठ-8/2.54 अरजुन ने कहा:**

कीस को कहते अटल बुदधी? कीस को हैं समाधीसथ कहते ?
कैसे औसे लोग बैठते, चलते, कहते या रहते ?

**2.55 योगेशवर ने कहा:**

हे अरजुन! जो अपने मन की सब अीचछा तज देता है,
होता है सनतुषट आप में, अटल बुदधी वह होता है.

**2.56**

सुख की नहीं कामना जीस को, दुख से भी कुछ खेद न हो,
राग, करोध, भय से वीमुकत जो, असे गयानरत मुनी कहो.

**2.57**

शुभ हो या हो अशुभ, मीले कुछ भी, परसनन वह हो जाये,
बुदधी सथीर होने से हरष, शोक का अंतर मीट जाये.

**2.58**

जैसे कछुआ अंगों को, समेटता है अपने अनदर,
वैसे बुदधीमान अीनदरीयों को, कर लेता अपने अनदर.

**2.59**

केवल वीषय दूर होते, जब पराणी अनन तयागता है,
पाकर बरहम, मोह जो रस का, वह भी दूर भागता है.

**2.60**

करते हैं वीदवान यतन, अीनदरीयों को वश में करने को,
लेकीन हैं बलवान अीनदरीयां, करती आकरषीत मन को.

**2.61**

संयम से रोके अीन को, मुझ में रत हो, आसथा जीस की,
जीस ने अीनदरीयों को जीता, होती है बुदधी सथीर असु की.

**2.62**

वीषय लगाव बढ़े अीनदरीयों से, वीषयों से कामना बढ़े,
जब कामना बहुत बढ़ जाये, पराणी को तब करोध चढ़े.

**2.63**

पैदा हो सममोह करोध से, सममोह समरीती भरषट करे,
भरषट समरीती से बुदधी नाश है, जो पराणी को नषट करे.

**2.64**

अीनदरीयों को वश में कर कोअी, राग, दवेष से रहे परे,
वीषयों में वीचरण कर के भी, दैवी परसाद पराप्त करे.

**2.65**

दैवी परसाद पाने से, दुख की बेड़ी कट जाती है,

परसनन-चीत होने से जलदी, बुदधी अटल हो जाती है.

**2.66**

वीकल बुदधी से गयान न होता, बीना गयान के धयान नहीं,
धयान न हो तो शानती नहीं है, बीना शानती आननद नहीं.

**2.67**

रहे ईनदरीयों में जीस का मन, चंचल बना सवभाव रहे,
उस की बुदधी भटकती, जैसे हवा से जल में नाव बहे.

**2.68**

हे अरजुन! जीस ने ईनदरीयों को वीषयों से है दूर रखा,
अपने अनदर बुदधी उसी ने, संयम कर के अटल रखा.

**2.69**

जब सारा जग सो जाता है, तब योगी जग जाता है,
सारा जग जब जाग रहा हो, योगी तब सो जाता है.

**2.70**

जैसे नदीयां मीलें, कीनतु सागर में बाढ़ नहीं होती,
उसी तरह, करमों से मन की शानती नहीं वीचलीत होती.

**2.71**

तयाग सभी ईचछाओं को, जो अहम पार कर जाता है,
मुकत कामनाओं से होकर सदा शानती, सुख पाता है.

**2.72**

परापत करे जो बरहम चेतना, सममोह में नहीं पड़ता,
ईस को पाकर वयकती, अंत में, परमानंद परापत करता.

## अधयाय-03

## करम योग

**सापताहीक पाठ-9/3.01 अरजुन ने कहा:**

योगेशवर, यदी तुम करमों से उततम गयान बताते हो,
तो मुझ को ईन भीषण करमों में कीस लीये लगाते हो?

**3.02**

बात दोगली सी कर तुम ने, बढ़ा दीया मेरे भरम को,
दोनों में कीस को अपनायें? साफ़ बताओ तुम मुझ को.

**3.03 योगेशवर ने कहा:**

हे अरजुन! जग में दो राहों को ईस लीये बनाया है,
गयानी को तो गयान-मारग, योगी को करम बताया है.

**3.04**

केवल करम न करने से, कया करम-मुकत होता कोई?
या लेकर सनयास करम से, सीदधी परापत करता कोई?

**3.05**

बीना करम कोई भी पराणी, रहता नहीं एक पल भी,

परकरीती गुणों पर ये आधारीत, करम रुक सके नहीं कभी.

3.06

रोके करमेनदरीयां, कीनतु जो रखे वासनायें मन में,
मूरख वयकती वह, बहुत बड़ा पाखंड भरा अुस दुरजन में.

3.07

जो अीनदरीयों को वश में कर, अुन से सब करम कराता है,
अुस को समझो शरेषठ, वही सचचा योगी कहलाता है.

3.08

अचछा है नीयमीत करमों को करना, कुछ नहीं करने से,
तन की भी रकशा न हो सके, कोअी करम न करने से.

3.09

यगयों के अतीरीकत, करम सारे होते बनधनकारी,
नीरासकत हो यगय रूप ही, करम करो तुम हीतकारी.

3.10

आदी काल में अीशवर ने, जब सरीषटी रचाअी यगयों से,
कहा, बढ़े सनतान और अीचछा पूरी हो यगयों से.

3.11

तुम देवों को पोषो, वे भी तुम को पोषें यगयों से,
परापत करो कलयाण, पुषट होकर, तुम दोनों यगयों से.

3.12

कर परसनन देवों को, पराणी अुन से सब कुछ पायेगा,
भोगे जो देव को दीये बीन, वो तो चोर कहायेगा.

3.13

बचा यगय का जो खाते, वे संत लोग होते नीषपाप,
दुषट पकाते हैं जो अपनी ख़ातीर, अुन को लगता पाप.

3.14

अननों से पराणी होते, वरषा से पैदा होता अनन,
यगयों से वरषा होती, करमों से होता यगय अुतपनन.

3.15

अकशर से है जनम जगत का, जीस में होते करम सभी,
बरहम सरववयापी है, अुस को दरशाते हैं यगय सभी.

3.16

अीस संसारी चककर के अनुसार नहीं जो चलता है,
दुषट-सवभावी, अीनदरी सुखों में लीपत, वयरथ ही जीता है.

**सापताहीक पाठ-10/3.17**

जो है आतम-सुखी, सनतोषी, आतम-तरपती जीस को होती,
आवशयकता कभी करम करने की अुसे नहीं होती.

3.18

अैसी कोअी वसतु न जग में, करमों से वो परापत करे,

नीरभर रहे और पर, अैसे जीवन से वह रहे परे.

**3.19**

अनासकत हो, अैसी लीये, जो करम योगय है अुसे करो,
अैसे करमों दवारा ही तुम सरवोचचम पद परापत करो.

**3.20**

जनक आदी लोगों ने भी तो सीदधी-परापती के करम करे,
देख और लोगों को भी यह आवशयक है, करम करे.

**3.21**

जीन करमों को गयानी करते, अुनहें और भी करते हैं,
महान पुरुषों की दीखलाअी राहों पर सब चलते हैं.

**3.22**

हो मुझ को आवशयक, अैसा करम न तीनों लोकों में,
सब कुछ परापत मुझे, फीर भी मैं लगा हुआ हूं करमों में.

**3.23**

यदी मैं नहीं लगाअूं ख़ुद को, करमों में बीन आलस के,
सब अपनायें राह मेरी, वे बैठे रहें करम तज के.

**3.24**

यदी मैं करम छोड़ दूं, सारे लोक नषट हो जायेंगे,
भंग करूंगा सभी वयवसथा, लोग भरषट हो जायेंगे.

**3.25**

जैसे अगयानी, होकर आसकत, यहां पर करम करे,
अुसी तरह गयानी, औरों के भले के लीये करम करे.

**3.26**

अगयानी के मन को गयानी वीचलीत कभी नहीं करता,
करमलीन हो सवयं, अुनहें भी करने को परेरीत करता.

**3.27**

सारे करम जगत में, परकरीती गुणों पर आधारीत होते,
'मैं हूं करने वाला', अैसा केवल मूरख लोग कहते.

**3.28**

गुण, करमों का भेद परकरीती में, जीस ने भी है जान लीया,
वीषय, अीनदरी दोनों में गुण, यह नीरासकत हो मान लीया.

**3.29**

जो आसकत करम में, जीस को परकरीती गुणों का गयान नहीं,
अुस अगयानी को वीचलीत करना, गयानी का काम नहीं.

**3.30**

अरपीत कर करमों को मुझ पर, अपने मन को शुदध करो,
अीचछाओं को, अहंकार को, भय को तयागो, युदध करो.

**3.31**

होकर दूर दवेष से, जो शरदधा से मुझ में युकत रहे,

पालन कर मेरा अुपदेश, करम बनधन से मुकत रहे.

**3.32**

जो हैं भरे दवेष से, मेरा गयान नहीं अपनायेंगे,
अनधकार में फंसे मूरख, वे शीघर नषट हो जायेंगे.

**3.33**

गयानी, नीज सवभाव के ही अनुसार आचरण हैं करते,
दमन वीफल है, सभी परकरीती के ही अनुकूल करम करते.

**3.34**

सभी अीनदरीयों को वीषयों से राग, दवेष दोनों होते,
ये हैं शतरु, जान कर भी फीर कयों अीन के वश में होते?

**3.35**

अपना धरम अपूरण, कीनतु वह और धरम से अुततम है,
और धरम से डरो, मौत पाना सवधरम में अुततम है.

**सापताहीक पाठ–11/3.36 अरजुन ने कहा:**

हे योगेशवर! कयों करता है? नहीं चाहता जब नर आप,
कौन अुसे क़ाबू में करता? कौन कराता अुस से पाप?

**3.37 योगेशवर ने कहा:**

काम, करोध, जो पैदा करता, अुसे रजोगुण ही मानो,
कभी न हो सनतुषट, अीसी को पापी और शतरु जानो.

**3.38**

जैसे अगनी ढकी धूंअे से, झीलली से है गरभ ढका,
दरपण ढका मैल से, वैसे गयान काम से रहे ढका.

**3.39**

यह तो शतरु गयानीयों का, यह अगनी समान अतरीपत रहे,
अरजुन, अीसे समझ ले, अीस से वीवेक सब का ढका रहे.

**3.40**

काम वास करता अीनदरीयों में, चीत में और बुदधी में भी,
यह ढक देता गयान, वीमोहीत होता अीस से आतमन भी.

**3.41**

रोक अीनदरीयों को पहले, यह अुचीत, काम का दमन करो,
गयान और वीगयान नषट करने वाले को ख़तम करो.

**3.42**

तन से अूंची बनी अीनदरीयां, अुन से अूंचा मन होता,
मन से अूंची बुदधी, बुदधी से भी अूंचा आतमन होता.

**3.43**

परे बुदधी के आतमन, अीस को जान, जीत तू अपने को,
काम जीतना दुरलभ, शतरु बड़ा, कर ले वश में अीस को.

## अधयाय-04

## गयान योग

**सापताहिक पाठ-12/4.01 योगेशवर ने कहा:**

योग अनशवर, यह मैंने था, वीवसवान को सीखलाया,
वीवसवान ने मनु को, मनु ने अीकशवाकु को बतलाया.

**4.02**

योग, राज-रीषीयों ने, परमपरागत आपस में सीखा,
बहुत काल तक लुपत हो गया, तब यह योग नहीं दीखा.

**4.03**

योग पुराना, जीस के अनदर परम रहसय समाया है,
तू है मेरा भकत, सखा भी, तुझ को वह सीखलाया है.

**4.04 अरजुन ने कहा:**

वीवसवान जनमा पहले, वह तुम से पहले आया था,
कैसे समझूं तुमने ही यह योग अुसे सीखलाया था?

**4.05 योगेशवर ने कहा:**

हे अरजुन! हम दोनों पैदा हुये अनेकों बार यहीं,
मैं तो सभी जानता, लेकीन तुझ को कुछ भी गयात नहीं.

**4.06**

मैं हूं अमर, अजनमा, सभी पराणीयों का मैं सवामी हूं,
फीर भी होता परगट, परकरीती के नीयमों का अनुगामी हूं.

**4.07**

हे अरजुन! जब धरम पतन से वयाकुल यह संसार हुआ,
पुन: धरम को सथापीत करने, तब मेरा अवतार हुआ.

**4.08**

रकशा करने हेतु सजजनों की, मैं ततपर रहता हूं,
करूं नषट दुषटों को, अीस के लीये परगट मैं होता हूं.

**4.09**

मेरे दीवय जनम, करमों को, जो भी वयकती जान जाये,
जनम न ले फीर अीस जग में, वो मेरे पास चला आये.

**4.10**

राग, करोध, भय से वीमुकत, जो मेरी शरण पहुंचता है,
गयान, तपसया दवारा, हो पवीतर, मुझ में आ मीलता है.

**4.11**

जैसे भी कोअी आये, मैं अुसी तरह अपनाता हूं,
हे अरजुन! मैं सब राहों से, अपने पास बुलाता हूं.

**4.12**

परीथवी पर जो अपने करमों से फल की अीचछा रखते,

बली देकर वे, देव गणों से, फल को शीघर परापत करते.

**सापताहीक पाठ–13/4.13**

गुण, करमों से नीयमीत, चार वरण की रचना की मैंने,
कीनतु नहीं मैं बंधा करम से, चाह न फल की की मैंने.

**4.14**

करम मुझे दूषीत न करें, फल की मुझ को कामना नहीं,
जो यह जाने, अुस को कोअी करम कभी बांधता नहीं.

**4.15**

आदी काल में मोकश परापती के लीये सभी ने करम कीये,
अुन की तरह करम कर तू भी, मोकश मीले, बस अैसी लीये.

**4.16**

देख अकरम, करम का अंतर, गयानी भी हैं चकराये,
मैं बतलाअूंगा वह जीस से, दोष–मुकत तू हो जाये.

**4.17**

करम, अकरम, वीकरम सभी का, मुझ से तू पायेगा गयान,
अैसे समझ अरजुन, करमों में अंतर होता बड़ा महान.

**4.18**

करमों में जो अकरम देखे, अकरम में देखे जो करम,
योग–युकत गयानी है, यदयपी करता है वह सारे करम.

**4.19**

जीसके सारे करम, फलों की अीचछा से सवतनतर रहते,
अगनी परीकशा करे करम की, अुसे लोग पंडीत कहते.

**4.20**

करम–फलों को तयागे, तरपत रहे, न कीसी पर आशरीत हो,
अुस का आतमन मुकत, भले ही सदा करम में वह रत हो.

**4.21**

अहम और चीत जीस के वश में, अीचछा कोअी रहे नहीं,
तयाग समपदाओं को, तन से करम करे तो दोष नहीं.

**4.22**

सनतोषी, दवनदव से परे, अीरषया न रहे जीस के मन में,
जीत, हार में समान रहता, नहीं करम के बनधन में.

**4.23**

जो हो अनासकत, गयान में युकत, सथीर मन हो जाये,
करम करे यगय की तरह, वह करमों से अूपर जाये.

**4.24**

करम अुसे है बरहम, वसतु जो अरपीत हो वो भी है बरहम,
अनुभव करे बरहम को वह करमों में, पा लेता है बरहम.

**सापताहीक पाठ–14/4.25**

कुछ योगी अपने देवों के लीये यगय को करते हैं,

अनय, यगय को बरहम अगनी में ही अरपीत कर देते हैं.

**4.26**

कुछ संयम से शरवण आदी सब ईनदरी भसम कर देते हैं,
अनय ईनदरीयों में अुन के वीषयों की आहुती देते हैं.

**4.27**

कुछ करते अरपीत ईनदरीयों में, पराण-शकती के करमों को,
आतम-नीयनतरण की जवाला में, गयान जलाता है जीन को.

**4.28**

कुछ समपती, कुछ तप, कुछ योगाभयास समरपीत करते हैं,
कुछ मन वश में कर, वीदया या गयान समरपीत करते हैं.

**4.29**

कुछ शवासों के दवारा अपने पराण नीयनतरीत करते हैं,
पान, अपान वायु को अुचीत मारग में अरपीत करते हैं.

**4.30**

कुछ नीयमीत भोजन की, अपने पराणों में आहुती देते,
वे हैं गयानी यगयों के, अुन के सब पाप नषट होते.

**4.31**

परापत करें वो बरहम सनातन, बचा यगय का जो खायें,
यगय बीना तो लोक और परलोक नहीं कुछ भी पायें.

**4.32**

जग में यगय बहुत से, जीन की राह बरहम के मुख तक जान,
वे सब पैदा हुये करम से, मुकती दीलायेगा यह गयान.

**सापताहीक पाठ-15/4.33**

गयानमयी यगयों को भौतीक यगयों से अुततम पाते,
सभी करम, अंत में, गयान में मील कर वीलीन हो जाते.

**4.34**

आदर, वीनय, परशन, सेवा के दवारा परापत करो वह गयान,
गयानी, बड़ा दारशनीक ही बतलायेगा यह अूंचा गयान.

**4.35**

कभी भरानती में नहीं पड़े, यह गयान अगर तू पा जाये,
सब सतता पाये आतमन में, तब मेरे अनदर पाये.

**4.36**

पापी कैसा भी तू होवे, अनय पापीयों से बढ़कर,
पहुंचेगा अुस पार, गयान की नैया के अूपर चढ़कर.

**4.37**

जैसे अगनी जलाकर सब ईंधन को राख बनाती है,
अगनी गयान की, वैसे ही, करमों को ख़ाक़ बनाती है.

**4.38**

परीथवी पर गयान के बराबर कोई और न पवीतरता,

पाये जो पूरणता योग से, अुस को गयान आप मीलता.

**4.39**

शरदधावान, जीत अीनदरीयों को, गयान परापत कर लेता है,
गयान परापत कर शीघर, शानती सरवोचच परापत कर लेता है.

**4.40**

जो अगयानी, शरदधाहीन, शकी, वह हो जाता है नषट,
लोक और परलोक सब जगह, वह केवल पाता है कषट,

**4.41**

संशय को गयान से मीटा, जीस ने करमों का तयाग कीया,
योग-लीन हो, आतम-नीयनतरण कर, अपने को मुकत कीया.

**4.42**

अपने मन के संदेहों पर, चला गयान रूपी तलवार,
गयान-योग से, हे अरजुन! हो जायेगा अुन का संहार.

## अधयाय-05

## करम सनयास योग

**सापताहीक पाठ-16/5.01 अरजुन ने कहा:**

कभी परशंसा करम तयाग की, करम योग की कभी करो,
योगेशवर, बतलाओ, अीन में कौन अुचीत है? कीसे करो?

**5.02 योगेशवर ने कहा:**

करम तयाग या करम योग, दोनों ही मुकती दीलाते हैं,
करम योग लेकीन अुततम, अैसा गयानी बतलाते हैं.

**5.03**

सनयासी है वही, कामना और दवेष से मुकत रहे,
होकर मुकत सभी दवनदवों से, बनधन से भी मुकत रहे.

**5.04**

अंतर सांखय व करम योग में, अगयानी बतलाते हैं,
कीसी अेक पर चलने वाले, दोनों का फल पाते हैं.

**5.05**

सांखय योग से जो फल पाते, करम योग से भी पाते,
सही गयान अुन को, जो अेक मारग दोनों को बतलाते.

**5.06**

हे अरजुन! यह बहुत कठीन है, बीना योग सनयास मीले,
जो नीषठा से लगे योग में, बरहम अुसी को यहां मीले.

**5.07**

योग युकत, मन नीरमल, आतम नीयनतरीत, जीते अीनदरीयों को,
सब में अपनी आतमा देखे, पार करे वह करमों को.

**5.08**

होकर लीन बरहम में जो जानता, ततव हैं कया गहरे,
सब अीनदरीयों से करम करे, पर जाने अुस ने कुछ न करे.

**5.09**

छूते, खाते, आंख खोलते, सांस छोड़ते या लेते,
समझे केवल अिनदरियों से ही, सारे विषय लगे होते.

**5.10**

नीरासकत हो, अरपीत करे बरहम को अपने करम सभी,
जैसे जल न लगे पंकज को, पाप अुसे ना लगे कभी.

**5.11**

योगी करम करे बीन चाहत, करने पवीतर आतमन को,
तन, चीत, बुदधी, अिनदरियों दवारा, सदा कराये करमों को.

**5.12**

करम-फलों को तयाग, योग में लीन, शानती को पाता है,
रखे कामना करम-फलों की, बनधन में पड़ जाता है.

**5.13**

तयाग करम-फल, मन को जीते, आतमन कुछ न कराता है,
नौ दवारों के शरेषठ धाम में, आराम सुखद पाता है.

**5.14**

परमातमा न कराये करम, करम-फल से वह अलग रहे,
पराणी सवभाव के कारण ही, करम-फलों में लगा रहे.

**5.15**

अीशवर अनासकत दोनों से, पाप न ले वो पुनय न ले,
ढक दे जब अगयान गयान को, सममोहीत हो मन डोले.

**सापताहिक पाठ-17/5.16**

गयान परापत कर कोअी जब अगयान नषट कर देता है,
अुस के मन को गयान, सूरय की तरह परकाशीत करता है.

**5.17**

भकती, वीचार, चेतना दवारा, जो परमातमा पा जाते,
वापीस नहीं लौटते, अुन के पाप गयान से धुल जाते.

**5.18**

वीनयशील वीदया से जब पक जाता है पंडीत का गयान,
बराहमण, गअु, हाथी, कुतता, चांडाल दीखते अेक समान.

**5.19**

सामय अवसथा पाकर जब परिथवी पर सब को जीत लीया,
परमातमा नीरदोष, सामय है, अुस का ही अनुकरण कीया.

**5.20**

सुखी न हो अचछी चीज़ों से, बुरी चीज़ से दुखी न हो,
अटल-बुदधी, मोह-रहीत, गयानी, अुसे बरहम में लीन कहो.

**5.21**

पाता आतमानन्द वही, जो बाहय वीषय से रहे परे,
जो है लीन बरहम में, वह अनुपम सुख का अुपभोग करे.

**5.22**
अीनदरी-भोग से मीलते जो सुख, जनम दुखों को हैं देते,
अुन का है आरमभ, अंत भी, गयानी अुनहें नहीं लेते.

**5.23**
काम, करोध दोनों को रोके, जो करने से पहले ही,
वह नर है सचचा योगी, सुख से रहता है यहां वही.

**5.24**
जो अपने अनदर ही सुख, आननद, जयोती को पाता है,
मीलता है नीरवाण अुसे, वह बरहम रूप ही जाता है.

**5.25**
जो पवीतर, नीषपाप, दवैत के संशय जीन के दूर हुये,
अनुशासीत, परोपकारी, वे परम बरहम में लीन हुये.

**5.26**
काम, करोध से मुकत हुअे जो, मन अपने वश में जीन का,
परम गयान जीन को है, होता है नीरवाण यहां अुन का.

**5.27**
लगा दरीषटी को बीच भरीकुटी के, सभी वीषय का तयाग करे,
पान, अपान वायु का सांसों से नीयमीत संचार करे.

**5.28**
वश में कर अीनदरीयां, बुदधी, चीत, मोकश-परापती को ततपर हो,
काम, करोध, भय, से अूपर, अुस को सदैव ही मुकत कहो.

**5.29**
मैं सब यगय, तपों का भोगी, लोकों पर शासन करता,
सब का मीतर, अैसे जो जाने, नीशचय शानती परापत करता.

## अधयाय-06

## धयान योग

**सापताहीक पाठ-18/6.01 योगेशवर ने कहा:**
करम करे फल की अीचछा तज, योगी हो या सनयासी,
यगय कुंड बस नहीं जलाये, नहीं बने वो सनयासी.

**6.02**
जीस को सनयासी कहते हैं, अुस को ही कहते योगी,
संकलपों के तयाग बीना, कोअी भी नहीं बने योगी.

**6.03**
जो चाहे योग तक पहुंचना, करम अुसे साधन बनता,
योग परापत हो जाने पर ही, शम अुस का साधन बनता.

**6.04**
जब वीषयों या करमों में, आसकती नहीं रह जाती है,
तयाग करे संकलपों का, तब योग परापती हो जाती है.

**6.05**

अपने आप अुठाये अपने को, न कभी देवे गीरने,
आतमन अपना मीतर बने, आतमन ही अपना शतरु बने.

**6.06**

जीस ने अहंकार को जीता, आतमन अुस का मीतर बने,
जो न जीत पाये अपने को, अुस का आतमन शतरु बने.

**6.07**

अहंकार जो जीत, शानती को पाये, आतम-गयान पाये,
सुख-दुख, सरदी-गरमी, मान-अपमान, अीनहें समान पाये.

**6.08**

अीनदरीयां जीते, सुदरीढ़ रहे, जीस में हैं गयान और वीगयान,
योग-युकत वह, जीस को मीटटी, पतथर, सोना अेक समान.

**6.09**

मीतर, शतरु, नीषपकशी, तटसथ, अुदार-हरीदयी, अभीमानी,
पापी, बनधु, संत, सब से, समता का भाव रखे गयानी.

**6.10**

आतम-नीयनतरण करे, रहे अेकाकी, हो अीचछा से मुकत,
परीगरह की कामना न हो, मन भी परमातमा में ही युकत.

**6.11**

सवचछ भूमी जो अूंची-नीची न हो, वहां आसन रखकर,
कुशा घास, मरीगछाल और हो वसतर साफ़ अुस के अूपर.

**6.12**

चीतत, अीनदरीयां वश में कर, बैठे, मन को अेकागर करे,
आतम-शुदधी के लीये वहां, योगी अपना अभयास करे.

**6.13**

शरीर, सीर, गरदन को सथीर कर के वह बैठे सीधा हो,
और कहीं भी देखे नहीं, दरीषटी नासागर पर लगी हो.

**6.14**

परशानत मन वाला, नीरभय, बरहमचरय का पालन करता,
मन को मेरी ओर मोड़कर बैठ, धयान मुझ पर करता.

**6.15**

वह योगी, जीस का मन वश में, सदा योग में ही लग कर,
परापत करे नीरवाण, शानती, जो वीदयमान मेरे अनदर.

**6.16**

अुस को योग नहीं, जो खाता ज़यादा या कम खाता है,
नहीं अुसे भी, जो सोता है बहुत, या न सो पाता है.

**6.17**

योगी नीयमीत करम करे, आहार, वीहार करे परीमीत,
अुस में अनुशासन दुख-नाशी, नींद, जागना हैं नीयमीत.

**6.18**

चीतत, लालसा से हटकर, आतमन में सथीत हो जाता है,
सम-सवरता को पराप्त हुआ, वह योगलीन कहलाता है.

**सापताहीक पाठ-19/6.19**

योगी का चीत जैसे दीपक जलता वायुहीन सथल पर,
आतमन से वह मेल कराये, पहले मती को वश में कर.

**6.20**

मती वश में होने से, चंचल चीतत शानत हो जाता है,
चेतनता आतमन में पाकर, आननद परम पाता है.

**6.21**

सुख जो परे अीनदरी-सुख के, वह बुदधी लगाकर है पाता,
अुसको पा, भौतीक ततवों से वीचलीत कभी नहीं होता.

**6.22**

जीसे पराप्त कर समझे, अीस से बड़ी पराप्ती है कहीं नहीं,
अैसी सथीत में, बहुत बड़े दुख से भी वीचलीत हो न कहीं.

**6.23**

वही योग की पुनय सथीती, जीस का न कभी दुख से संयोग,
अटल बुदधी, दरीढ़ नीशचय, अभयासों दवारा पाते वह योग.

**6.24**

संकलपों से अुपजी, सभी कामनाओं को जो छोड़े,
सभी ओर से, अीनदरीयों को, मती दवारा वश में कर, मोड़े.

**6.25**

बुदधी लगाकर दरीढ़ता से, मन को आतमन में लीन करे,
धीरे-धीरे शानती पराप्त कर, और न कोअी धयान करे.

**6.26**

होकर चंचल और वीकल, जब यह मन दूर भाग जाये,
अुसे नीयंतरीत कर, आतमन के अनदर, फीर वापीस लाये.

**6.27**

सरवोततम सुख पराप्त करे, वो योगी जीस का मन हो शानत,
वो नीषपाप, बरहम तक पहुंचा, हुआ रजोगुण जीस का शानत.

**6.28**

हो पापों से मुकत, योग में आतमन सदा लगाता है,
आसानी से बरहम सपरश कर, शीघर परम सुख पाता है.

**6.29**

आतमन में देखे सब पराणी, सभी पराणीयों में आतमन,
समदरशी वह योगी, नीशपकशी होता है अुस का मन.

**6.30**

जो मेरे अनदर सब देखे, सब में देखे बस मुझ को,
दूर नहीं रहता वह मुझ से, नहीं भूलता मैं अुस को.

**6.31**

मैं हूं सभी पराणीयों में, जब योगी मुझ को भजता है,
कैसी भी हालत में हो, वह मुझ में नीवास करता है.

**6.32**

हे अरजुन! जो समदरशी, सब को अपने समान पाता,
खुद चाहे सुख में या दुख में हो, वह योगी कहलाता.

**6.33 अरजुन ने कहा:**

हे योगेशवर! तुम ने जो समता का योग बताया है,
मन की चंचलता से अुस का आधार नहीं पाया है.

**6.34**

चंचल, परचंड, बलशाली मन, सदा चाहता हठ करना,
अुस पर क़ाबू कठीन, जीस तरह कठीन हवा वश में करना.

**6.35 योगेशवर ने कहा:**

नी:सनदेह कठीन है, चंचल मन को क़ाबू में करना,
पर, वैरागय और अभयासों से समभव वश में करना.

**6.36**

योग-परापती है कठीन अुसे, जो मन पर क़ाबू नहीं करे,
जो संयमी, आतम-बल रकखे, वही योग को परापत करे.

**सापताहीक पाठ-20/6.37 अरजुन ने कहा:**

शरदधा होते भी मन को यदी अपने वश में नहीं करे,
कया होता अुस का जो पराणी सीदधी को नहीं परापत करे?

**6.38**

बरहम परापती से पहले ही जो, डगमग होकर भरषट हुआ,
कया वह फटे बादलों जैसा, कुछ न परापत कर, नषट हुआ?

**6.39**

पूरी तरह मीटा दे अब, हे योगेशवर! मेरा संशय,
तेरे सीवा नहीं कोअी जो दूर कर सके यह संशय.

**6.40 योगेशवर ने कहा:**

अरजुन, अीस जग में या और लोक में अुस का नाश न हो,
भला काम जो करता पराणी, अुस की दुरगती कभी न हो.

**6.41**

योग मारग में असफल हो, वह पुनय-लोक को जाता है,
पुन: पवीतर, समरीदध वयकती के घर में जनमा जाता है.

**6.42**

या वह बुदधीमान योगी के कुल में ले सकता है जनम,
कीनतु अीस जगत में, अती दुरलभ होता अीस परकार का जनम.

**6.43**

वहां परात करता अुन संसकारों को, जो पहले वीकसे,
यतन करे अुन के बढ़ने का, हों समपूरण यहां फीर से.

**6.44**

हुआ विवश सा पिछले अभयासों से, अुननति परापत करे,
जिगयासु, योग दवारा, शासतर बनधनों को भी पार करे.

**6.45**

पापों से ही मुकत, कअी जनमों में निज को पूरण करे,
परापत करे सरवोचच लकशय, यदि लगन लगाकर यतन करे.

**6.46**

तपसवियों से बढ़कर योगी, गयानी से बढ़कर योगी,
करम-कांडियों से बढ़कर वह, अरजुन, तू बन जा योगी.

**6.47**

सभी योगियों में अुस योगी को ही शरेषठ मैं समझता,
जो शरदधा से अपने मन को मुझ में लगा, मुझे भजता.

**अधयाय-07**

**गयान विगयान योग**

**सापताहिक पाठ-21/7.01 योगेशवर ने कहा:**

मन को मुझ में लगा,  योग में लीन, मुझे ही आशरय मान,
कैसे पूरी तरह मुझे जानेगा, अरजुन, अब यह जान.

**7.02**

पूरी तरह बताअूंगा मैं तुझ को, गयान और विगयान,
कुछ भी शेष नहीं रह जायेगा, जब लेगा अिस को जान.

**7.03**

अेक, हज़ारों में, मुझ को पाने का यहां यतन करता,
अुन में से विरला ही मेरा सचचा रूप परापत करता.

**7.04**

परिथवी, जल, अगनि, वायु, आकाश, बुदधि, चित और अहंकार,
आठ ततव ये परकरिति में निहित, जिन से निरमित है संसार.

**7.05**

यह मेरी है निमन परकरिति, बतलाअूं अुचच परकरिति को भी,
चेतन जीव रूप, जिस पर आधारित है यह विशव सभी.

**7.06**

यह भी समझ, सभी पराणी दोनों से पैदा होते हैं,
मैं ही अुन को देता जनम, मेरे कारण ही मरते हैं.

**7.07**

मुझ से अलग वसतुअें, अरजुन, यहां नहीं कोअी होतीं,
सब मुझ में, जैसे मणियां धागे में गुंथी हुअी होतीं.

**7.08**

अरजुन, मैं हूं जल में सवाद, चांद, सूरज में परकाश हूं,
मैं वेदों में ओम, शबद नभ में, पुरुषों में पौरुष हूं.

**7.09**

चमक अगनि की हूं मैं, विशुदध सुगनध हूं मैं परिथवी में,

सभी पराणीयों में जीवन हूं, तप हूं बड़े तपसवी में.

**7.10**

सारी वीदयमान चीज़ों का, बीज सनातन मुझ को मान,
बुदधीमान की बुदधी, तेज तेजसवी का, मुझ को ही जान.

**7.11**

अीचछा और काम के तयागी, बलवानों का बल हूं मैं,
सभी पराणीयों के अनदर, धरमानुकूल चाहत हूं मैं.

**सापताहीक पाठ-22/7.12**

गुण सातवीक, राजसीक, तामसीक, तीनों जनमे हैं मुझ से,
वे मुझ से, मैं अुन से नहीं, भली परकार जान ले अैसे.

**7.13**

परकरीती गुणों से भरम में पड़, जग मुझे नहीं पहचान सके,
मैं सब से अूपर अवीनाशी हूं, अीस को ना जान सके.

**7.14**

तीन गुणों की माया को जीतना, बहुत मुशकील होता,
जो मुझ को भजते, माया से बचना अुनहें सरल होता.

**7.15**

बुरे काम करने वाले जो मूरख, अधम, भरमाते हैं,
वे सवभाव से राकशस, मेरी शरण में नहीं आते हैं.

**7.16**

हे अरजुन! मेरी पूजा करते हैं चार तरह के लोग,
दुख में फंसे, सतय के परेमी, धन के अीचछुक, गयानी लोग.

**7.17**

अीन में गयानी शरेषठ, बरहम में लीन, धयान में वजी होता,
मैं अुस का परीय हूं, वह भी मुझ को अती परीय सदैव होता.

**7.18**

यूं तो सब अचछे, पर गयानी सरवशरेषठ, मैं भी वो हूं,
पूरी तरह योग में लग, अुस का जो लकशय, वही मैं हूं.

**7.19**

बाद बहुत से जनमों के, गयानी समझे, सब अीशवर है,
मैं होता हूं पराप्त अुसे, पर अैसा गयानी दुरलभ है.

**सापताहीक पाठ-23/7.20**

जीन की मती हो गअी वीकरीत, मन की अीचछाओं पर चल कर,
जाते अनय देवताओं को, अपने सवभाव के बल पर.

**7.21**

कीसी रूप में पूजे कोअी भकत मुझे, कर के शरदधा.
अुसी रूप में सुदरीढ़ बना देता हूं मैं अुस की शरदधा.

**7.22**

पूजा करे कीसी की भी, पर हो पूरी शरदधा अुसमें,

वांछीत फल मील जाता है, वह फल अुस को देता हूं मैं.

7.23

अलप बुदधी के लोग, यहां केवल असथाअी फल पाते,
मीलते देव, देव पूजा से, मेरे भकत मुझे पाते.

7.24

अगयानी, जो मेरे असली सवभाव को जानते नहीं,
वयकत मानते, मैं अवयकत हूं, अुचच गयान जानते नहीं.

7.25

ढका योग माया से, सममुख आता हूं मैं कभी नहीं,
मूरख न जाने, जनम और परीवरतन से मैं बंधा नहीं.

7.26

जो अतीत में हुये, अीस समय हैं, भवीषय में जो होंगे,
अरजुन, मैं अुन सब को जानूं, मुझे नहीं वे जानेंगे.

7.27

सब पराणी अीचछा से और दवेष से पैदा होते हैं,
कीनतु दवनदव के चककर में पड़, भरम में खोये होते हैं.

7.28

पर वे पुनयातमा पराणी, सब नषट हो गये जीन के पाप,
मुकत दवैत से, होकर सथीर, मेरी पूजा करते हैं आप.

7.29

जरा, मरण से मुकती परापत करने जो शरण मेरी आये,
आतमन, बरहम, करम, अीन सब की पूरी बात जान जाये.

7.30

मैं हूं अननय, मैं ही शासक, परीथवी, देव, यगय का हूं,
जो यह जाने अुसे मरण पर दीवय चेतना देता हूं.

## अधयाय-08

## अकशर बरहम योग

**सापताहीक पाठ-24/8.01 अरजुन ने कहा:**

हे योगेशवर! आतमन कया है? कया है बरहम? करम है कया?
कया ततवों का कशेतर जगत में? कशेतर देवताओं का कया?

8.02

यहां कौन सा यगय शरेषठ है, अुस को कैसे पहचानें?
वश में कर अपने को, मरते समय तुझे कैसे जानें?

**8.03 योगेशवर ने कहा:**

बरहम अनशवर सरवोपरी है, सवभाव आतमन को मानो,
कारण सब का जो सरजनातमक शकती, करम अुस को जानो.

8.04

कशर का है आधार परकरीती, है पुरुष अमरता का आधार,
हे अरजुन! मैं ही शरीर में सब यगयों का हूं आधार.

**8.05**

मरितयु समय कोअी, मुझ में ही धयान लगा, तन तयाग करे,
कुछ भी संशय नहीं कि वो मेरी ही सथीती को परापत करे.

**8.06**

करता हुआ धयान जिस का, अपने शरीर का तयाग करे,
लगा रहे वह अुसी धयान में, अुसी दशा को परापत करे.

**8.07**

अिसी लिये, तू मुझे याद कर सदा, और कर युदध यहां,
मुझ में लगा बुदधी, चीत अपने, परापत करेगा मुझे यहां.

**8.08**

लगा योग में बुदधी, कोअी भी, परम पुरुष का धयान करे,
भटके नहीं चीतत अुस का, वह दिवय पुरुष को परापत करे.

**8.09**

जो शासक, पोषक, सब का गयाता, अनादि, अणुओं में है,
अुस का रूप अचीनतनीय, तम नाशक, वह कीरणों में है.

**8.10**

भकती योग से पराण शकती को, केनदरीत भौं के बीच करे,
अैसा कर, वह मरितयु समय, अुस दिवय पुरुष को परापत करे.

**सापताहिक पाठ-25/8.11**

अब सुन वरणन अकशर का, संयमी जहां परवेश करते,
कर जिस की कामना, बरहमचारी आचरण शुदध करते.

**8.12**

मन अपना दरिढ़ कर, संयमीत करे जो तन के दवारों को;
हो कर लीन योग में, पराण-मारग में रोके सांसों को;

**8.13**

मुंह से नीकले शबद 'ओम', यदि करता याद रहे मुझ को,
तयागे तन, छोड़े जग को, वह पाये दिवय चेतना को.

**8.14**

अनय कीसी का धयान न कर, मेरा सदैव ही धयान करे,
वह अनुशासीत योगी, मुझ को आसानी से परापत करे.

**8.15**

मुझ तक पहुंच, महान आतमायें, सीदधी परापत हैं कर लेतीं,
जग, दुख का घर है असथाअी, अिस में जनम नहीं लेतीं.

**8.16**

बरहमलोक से नीचे सब लोकों से पुनरजनम होता,
कर ले परापत मुझे कोअी, तब अुस का जनम नहीं होता.

**8.17**

बरहममा का दिन हज़ार युग का, हज़ार युग की होती रात,
जिस ने जान लिया यह, अुस को रातरी, दिवस हैं पूरे गयात.

8.18

दीन आने पर, अवयकत सब वसतुओं परगट हो जाती हैं,
होती रात, कहीं अवयकतता में वीलीन हो जाती हैं.

8.19

हाल बुरा असतीतवमान चीज़ों का बेबस ही होता,
होता रूप वीलीन रातरी में, दीन में पुन: परगट होता.

8.20

औसी सथीती से परे, अनय अवयकत सनातन है असतीतव,
मीटती असतीतवमान चीज़ें, पर रहता उस का असतीतव.

8.21

वही अवयकत अनशवर भी, सरवोचच सथीती उस को कहते,
जहां पहुंचकर नहीं लौटते, मेरा परम धाम कहते.

8.22

जीस से यह संसार रचीत, जीस में सब भूत नीवास करें,
हे अरजुन! उस परम पुरुष को, अटल भकती से परापत करें.

8.23

अब वह समय बताता हूं, संसार छोड़ जब जाते हैं,
या तो जग में नहीं लौटते, या फीर वापीस आते हैं.

8.24

शुकल पकश, उजीयाला, दीवस, अगनी, छ: मास उततरायण के,
इन में जग तयागे कोई तो पहुंचे नीकट परम बरहम के.

8.25

करीषण पकश, अंधकार, रातरी, धुआं, छ: मास दकशीणायन के,
आ जाते हैं लौट यहीं पर, इन में चनदर जयोती पा के.

8.26

जयोती और अनधकार के, दो शाशवत मारग कहे जाते,
पहुंच जयोती तक, नहीं लौटते, लौट अंधेरे से आते.

8.27

उस ने दूर कीया अपना भरम, जीस ने सही मारग जाना,
अरजुन, तेरे लीये उचीत है, योग मारग में जुट जाना.

8.28

वेदों के अधययन, दान, तप, पुनय, यगय के सारे फल,
लगते हैं छोटे उस योगी को, जो पहुंचे बरहम सथल.

O

**अधयाय-09**

**राज वीदया राज गुहय योग**

**सापताहीक पाठ-26/9.01 योगेशवर ने कहा:**

अरजुन, तू ईरषया से रहीत, समझ ले गोपनीय यह गयान,
मुकत बुराई से होगा, जब लेगा ईस वीदया को जान.

9.02

यह वीदया सब से पवीतर, यह परम गयान अनुभव से हो,
यह धरमानुकूल, ईस का अभयास सरल, यह नषट न हो.

9.03

अरजुन, जो धरमानुसार शरदधा न कभी कर पाते हैं,
मुझे न कर के पराप्त, लौटकर मरतयु-लोक में आते हैं.

9.04

मैं हूं नीरगुण, लेकीन, मैं हूं वयापत यहां सारे जग में,
सब मुझ पर आधारीत, लेकीन मैं न दीखाई दूं उन में.

9.05

यह रहसय तू समझ, कहीं जीवों में मेरा वास नहीं,
सब को संभालती है मेरी आतमा, रहती वहां नहीं.

9.06

जैसे नभ में सदैव चलती, वायु परचंड और गतीमान,
उसी तरह सब वसतु करें मुझ में वीचरण, तू ईस को जान.

9.07

हुआ कलप का अंत, परकरीती में सब वसतुएं समाती हैं,
वो मेरी ही परकरीती, कलप में फीर वापीस आ जाती हैं.

9.08

वसतु नीरंतर पैदा करता, सदा परकरीती को कर वश में,
बेबस हैं सब पैदा होकर, सभी परकरीती के बंधन में.

9.09

कभी न बांधे मुझको, कोई करम कीसी भी बंधन में,
अनासकत और उदासीन, करमों के अनदर रहता मैं.

9.10

हे अरजुन! मेरी ही देख-रेख में जान ईस परकरीती को,
जीस से संसार-चकर घूमे, मीलता जनम चराचर को.

9.11

मूरख लोग, मानव शरीर धर, अवहेलना करें मेरी,
जानें नहीं रूप सवामी का, उचच परकरीती जो है मेरी.

9.12

वे असुरों का और राकशसों का सवभाव ले यहां रहें,
आशा, करम, गयान हैं वीफल, बीना वीवेक वे सदा रहें.

9.13

अरजुन, महान आतमा वाले, दीवय परकरीती में जो रहते,
मुझे अनशवर, सब का मूल मान, मेरी पूजा करते.

9.14

नत होकर मेरे आगे, मेरा गुणगान सदा करते,
होकर सथीर वे भकती भाव से, मेरी ही पूजा करते.

**9.15**

अनय लोग गयान-यगय दवारा मेरी अुपासना करते,
अेक रूप या अनेक रूपों वाला जान मुझे भजते.

**सापताहिक पाठ-27/9.16**

करम-कांड हूं मैं, पीतरों का पींड दान हूं, यगय हूं मैं,
औषधी, मनतर और घी हूं मैं, अगनी तथा आहुती हूं मैं.

**9.17**

माता, पीता, पीतामह, धाता, पुनय, गयान का लकशय हूं मैं,
सामवेद, रिगवेद, यजुरवेद और 'ओम' की धवनी हूं मैं.

**9.18**

पोषक, मीतर, नीवास, शरण, सवामी, साकशी, अुददेशय हूं मैं,
सरवनाश, भंडार, सथल, अुतपतती, अनशवर बीज हूं मैं.

**9.19**

मैं तपता, मैं वरषा करता, मरीतयु, अमरता देता मैं,
अरजुन, मैं हूं सतय और अुस के ही साथ असतय हूं मैं.

**9.20**

पाप-मुकत, वेदों के गयानी, सोम पान कर यगय करें,
सवरग लोक में पहुंच, वहां देवों के सब सुख परापत करें.

**9.21**

सवरग लोक से वापीस, फीर वे मरीतयुलोक में आ जाते,
वेद-धरम का पालन कर, सुख-अीचछा से आते, जाते.

**9.22**

जो अधयवसायी होकर, चीनतन करते हैं मेरा ही,
अुन के योग और हीत दोनों को, संभालता हूं, मैं ही.

**9.23**

शरदधा से जो अनय देवताओं की पूजा करते हैं,
यदयपी पूरण नहीं, फीर भी वे मेरी पूजा करते हैं.

**9.24**

मैं सब यगयों का अुपभोगी, मैं सब का पालन करता,
मेरा असली रूप न जाने, वह सदैव नीचे गीरता.

**9.25**

पूजें देव, देव पायें, पीतरों को पूज, पीतर पायें,
भूत पूज कर भूत मीलें, मुझ को पूजें, मुझ को पायें.

**9.26**

पतती, पानी, पुषप और फल, मुझ को दे शरदधा के साथ,
नीरमल मन से दी भेंटें, मैं लेता सभी परेम के साथ.

**9.27**

अरजुन, तू जो करता, खाता, और यगय जो तू करता,
समझ मुझे अुपहार सभी कुछ, दान और तप जो करता.

**9.28**

शुभ या अशुभ करम के सभी फलों से हो जायेगा मुकत,
मुझे परापत कर, तयाग मारग दवारा, होगा बंधन से मुकत.

**9.29**

मुझ को सभी समान, कीसी से बैर, लगाव नहीं मुझ में,
भकती भाव से पूजा करते, मैं अुन में हूं, वे मुझ में.

**9.30**

बड़ा दुराचारी, यदी तयागे पाप और मुझ को भज ले,
समझो अुस को धरमातमा, जो यह अचछा नीशचय कर ले.

**9.31**

शानती चीरसथाअी मीलती है, पुनयातमा बन जाता है,
हे अरजुन! यह सतय, भकत मेरा न नषट हो पाता है.

**9.32**

औरत, वैशय, शूदर हो, चाहे नीचे कुल में जनम लीया,
आकर मेरी शरण सभी ने, लकशय अुचचतम परापत कीया.

**9.33**

फीर पवीतर बराहमणों, राज-रीषीयों का तो है कया कहना,
असथाअी, दुख भरे जगत में, धरम, मेरी पूजा करना.

**9.34**

यगय करो मेरे ही लीये, भजो अपने मन में मुझ को,
आओ मेरी शरण, युकत हो मुझ में, परापत करो मुझ को.

## अधयाय-10

## वीभूती योग

**सापताहीक पाठ-28/10.01 योगेशवर ने कहा:**

हे अरजुन! अब मेरे सब से अूंचे वचनों को सुन तू,
तुझे बताता हूं मैं वह, जीस से आननद परम ले तू.

**10.02**

मेरा मूल जानने में रीषी और देव भी करते भूल,
सब परकार से मैं ही सारे रीषीयों, देवों का हूं मूल.

**10.03**

मुझे अजनमा, अनादी, सब का सवामी, जीस ने जान लीया,
मरीतयु लोक में भरम से, पापों से, अपने को मुकत कीया.

**10.04**

बुदधी, कशमा, संमोह-तयाग, अीनदरी-नीयंतरण, गयान, सतयता,
सुख-दुख, अनसतीतव, असतीतव, आतम-संयम, भय, नीरभयता;

**10.05**

यश, अपयश, संतुषटी, अहींसा, तप, समता, दानवीरता,
ये सब दशा पराणीयों की हैं, जीन को मैं पैदा करता.

**10.06**

सातों रीषी, चारों मनु, सब मुझ से ही होते हैं पैदा,
वे सब मेरी परकरीती से बने, अुन से सब पराणी पैदा.

**10.07**

ततव रूप में मेरी शकती और यश को जो जान गया,
अीस में संशय नहीं, योग से अुस ने मुझ को परापत कीया.

**10.08**

मैं सब का अुतपतती सथल हूं, मुझ से सरीषटी चले सारी,
गयानी अीस को जान, रखें वीशवास, करें पूजा मेरी.

**10.09**

जीवन मुझ पर अरपीत कर, जो बुदधी लगाते हैं मुझ में,
मेरी चरचा कर आपस में, आनंद परापत करें मुझ में.

**10.10**

करें नीरंतर भकती मेरी, परेम से करें पूजा मेरी,
अुनहें बुदधी अेकागर मीले, अुन को ही शरण परापत मेरी.

**10.11**

दया दीखाता सब पर, अपने असल रूप में रहता हूं,
गयान दीप से अुन के मन के अंधकार को हरता हूं.

**सापताहीक पाठ–29/10.12 अरजुन ने कहा:**

परम बरहम तू, परम धाम तू, पावन तू, परमेशवर तू,
तू है परथम देवता, तू है अजनम, सरववयापत है तू.

**10.13**

नारद, असीत, वयास, देवल ने अैसा ही बतलाया है,
सब रीषीयों ने यही कहा, अब तू ने यही बताया है.

**10.14**

योगेशवर, मैं सतय मानता, जो कुछ भी तू कहता है,
तेरा रूप, देवता, राकशस, कोअी नहीं जानता है.

**10.15**

पुरूषोततम, सब का सवामी, देवता सभी देवों का तू,
जगत पीता, मूल तू सभी का, सब कुछ आप जानता तू.

**10.16**

अपने सभी दीवय रूपों को अब तू बतला दे मुझ को,
जीन के दवारा सब लोकों में वयापत हुआ समझूं तुझ को.

**10.17**

कैसे, नीत चीनतन कर के, पाअूं मैं तेरा पूरा गयान,
कीन वीभीनन रूपों में, हे योगेशवर! हो तेरी पहचान.

**10.18**

करिषण, बता तू अपनी शकती, वीभूती, सभी वरणन कर के,
नही अघाता हूं मैं अमरित जैसे वचनों को सुन के.

**सापताहीक पाठ-30/10.19 योगेशवर ने कहा:**
हे अरजुन! मैं तुझ को अपनी दीवय वीभूती बताअूंगा,
अंत नहीं अुस का, मैं केवल अंश मातर बतलाअूंगा.

**10.20**
सभी पराणीयों के हरीदयों में बसी हुअी आतमा हूं मैं,
सभी वसतुओं का परारमभ, मधय भी और अंत भी मैं.

**10.21**
आदीतयों में वीषणु, परकाशों में जयोतीरमय सूरय हूं मैं,
मरुतों में मरीची हूं मैं, नकशतरों में चनदा हूं मैं.

**10.22**
वेदों में हूं सामवेद, मैं अीनदर देवताओं में हूं,
सभी पराणीयों में चेतनता, अीनदरीयों से अूपर मन हूं.

**10.23**
कुबेर यकशों और राकशसों में, शंकर हूं रुदरों में,
परवत के शीखरों में मेरु, अगनी हूं सारे वसुओं में.

**10.24**
हे अरजुन! मैं पुरोहीतों में मुखय पुरोहीत बरीहसपती हूं,
सकनद हूं सेनापतीयों में, जलाशयों में सागर हूं.

**10.25**
महान रीषीयों में भरीगु हूं, वाणी में अकशय ओम हूं मैं,
यगयों में जप यगय, हीमालय अचल वसतुओं में हूं मैं.

**10.26**
वरीकशों में पीपल हूं और दीवय रीषीयों में नारद हूं,
सीदधों में हूं कपील, चीतररथ महान गनधरवों में हूं.

**10.27**
अमरीत से अुतपनन हुआ अुचचैशरवा हूं मैं अशवों में,
शरेषठ हाथीयों में अैरावत, राजा हूं मैं मनुजों में.

**10.28**
शसतरों में हूं वजर और गअुओं में कामधेनु हूं मैं,
कामदेव सनतानोतपतती में, सरपों में वासुकी हूं में.

**10.29**
मैं नागों में अनंतनाग हूं, वरुण सभी जलदेवों में,
पुतरों में अरयमा और यम हूं मैं संयमशीलों में.

**10.30**
दैतयों में हूं मैं परहलाद, गीनती के लीये काल हूं मैं,
गरुड़ पकशीयों में हूं, पशुओं में पशुराज सींह हूं मैं.

**10.31**

पवीतर करने वालों में हूं पवन, राम हूं वीरों में,
मचछों में हूं मगरमचछ, गंगा हूं बहती नदीयों में.

10.32
सरीजीत वसतुओं का परारमभ, मधय भी और अंत भी मैं,
गयानों में आधयातम गयान, मैं तरक हूं वाद-वीवादों में.

**सापताहीक पाठ-31/10.33**
मैं हूं काल अनशवर, अकशर में 'अ', दवनदव समासों में
मैं हूं वही वीधाता जीस के मुख हैं सभी दीशाओं में.

10.34
सब को नीगले वही मरीतयु हूं, भवीषय का अुदगम हूं मैं,
नारी में शरी, कीरती, समरीती, धरीती, वाणी, बुदधी, कशमा हूं मैं.

10.35
गीतों में हूं बड़ा साम, गायतरी हूं मैं छनदों में,
माघ महीनों में हूं, पुषपीत वसंत हूं मैं रीतुओं में.

10.36
छलने वालों का जूआ हूं, तेजसवी का तेज हूं मैं,
मैं हूं वीजयी का परयतन, अचछों में अचछाअी हूं मैं.

10.37
पांडव पुतरों में अरजुन हूं, वासुदेव हूं वरीषणीयों में,
मुनीयों में हूं वयास और अुशना कवी हूं मैं कवीयों में.

10.38
नीती वीजय पाने वालों की, दंड शासकों का हूं मैं,
मौन रहसयपूरण चीज़ों का, गयान गयानीयों का हूं में.

10.39
हे अरजुन! सारी चीज़ों का बीज मेरे अंदर होता,
नहीं चराचर कोअी, जो मौजूद बीना मेरे रहता.

10.40
अीतनी वीभूतीयां हैं मेरी, अंत नहीं होगा अुन का,
अरजुन, बतलाया है मैंने, अंशमातर अुस महीमा का.

10.41
जो कोअी भी गौरव, शोभा, अूरजा से अुतपनन हुआ,
अुस का जनम, समझ, मेरे ही तेजसवी अंश से हुआ.

10.42
अरजुन, कया आवशयकता, तू सीखे अीतना गहरा गयान,
मेरे सूकशम अंश के अूपर, टीका हुआ यह वीशव महान.

**अधयाय-11**

**वीशव रूप दरशन योग**

**सापताहीक पाठ-32/11.01 अरजुन ने कहा:**

आतमा का तूने, योगेशवर, परम रहसय बताया है,
अुस ने मेरे मन के सारे भरम को दूर कराया है.

**11.02**

सभी वसतुओं की अुतपतती और अुननती का गयान सुना,
तेरे अकशय, अनंत गौरव को मैंने समपूरण सुना.

**11.03**

योगेशवर, यदी अैसा ही है, जैसा बतलाया मुझ को,
तो अपने ओशवरी रूप को भी अब दीखला दे मुझ को.

**11.04**

यदी समझे, तेरा वह रूप दीखाओी दे सकता मुझ को,
हे योगेशवर! अपना रूप अनशवर दीखला दे मुझ को.

**11.05 योगेशवर ने कहा:**

हे अरजुन! मेरे सैकड़ों, हज़ारों रूपों को तू देख,
वीवीध रंगों, आकरीतीयों वाले, अनगीन दीवय रूप तू देख.

**11.06**

आदीतयों, वसुओं, रुदरों, अशवीनों और मरुतों को देख,
कभी नहीं देखे पहले, अुन अनेक आशचरयों को देख.

**11.07**

हे अरजुन! तू जम कर आज यहां सब चराचरों को देख,
जो चाहे देखना अुसे अेकतरीत मेरे तन में देख.

**11.08**

कीनतु मानवी आंखों से तू, मुझे नहीं पायेगा देख,
दीवय दरीषटी देता हूं, जीस से मेरी दीवय शकती को देख.

**11.09 संजय ने कहा:**

अीस परकार कहकर, योगेशवर ने अरजुन को समझाया,
अपना ओशवरीय, सरवोचच रूप अुस को तब दीखलाया.

**11.10**

अनेक मुख, आंखों वाले अदभुत शरीर सममुख आये,
दीवय भूषणों से शोभीत, अनगीनती दीवय शसतर पाये.

**11.11**

लेप, वसतर, मालायें और अीतर हैं लगे हुये तन पर,
वीसमयकारी, दीवय, बड़े मुख दीख रहे हैं अीधर-अुधर.

**11.12**

जयोती हज़ारों सूरयों की यदी अेक साथ नभ में चमके,
अुस महान छवी का तेजसवी रूप अुस तरह से दमके.

**11.13**

देवों के शरीर को भी तब अनेक रूपों में देखा,
बंटे हुये सारे लोकों को अेक जगह केनदरीत देखा.

**11.14**

हुये रोंगटे खड़े, वीर अरजुन ने आशचरय भी कीया,
शीश झुकाकर, हाथ जोड़कर, शरी करीषण को परणाम कीया.

**सापताहीक पाठ-33/11.15 अरजुन ने कहा:**

सभी देवता, अनेक पराणी-समूह, मैं हूं देख रहा,
कमलासन पर बरहममा, रीषीयों, नागों को भी देख रहा.

**11.16**

बांह, पेट, मुख, और नेतर, सब अनंत रूपों में आये,
कीनतु कहीं भी आदी, मधय या अंत नहीं अुन के पाये.

**11.17**

मुकुट, गदा, चकरादी सभी के तेज रूप मैं देख रहा,
जयोतीरमय सूरय की तरह वो आग धधकती देख रहा.

**11.18**

तू है वीशराम सथल जगत का, तू है गयान और भगवान,
तू है अमर धरम का रकशक और सनातन तू अीनसान.

**11.19**

शकती अनंत, असंखय भुजायें, सूरज, चांद नेतर तेरे,
आदी, अंत, मधय से रहीत, है अगनी भरी मुंह में तेरे.

**11.20**

नभ, परीथवी पर, सभी दीशा में, वयापत अकेला तेरा रूप,
तीनों लोक कांप अुठते हैं, देख भयंकर तेरा रूप.

**11.21**

देवों के समूह तुझ में कर परवेश, तेरी सतुती करते,
रीषी, मुनी भी मंतरों दवारा कह 'सवसती' तुझे शोभीत करते.

**11.22**

रुदर, अदीतय, साधय, वसु, अशवीनी, गनधरव, मरुत और पीतर,
यकशों, असुरों, सीदधों के समूह देखें वीसमीत होकर.

**11.23**

अनेक मुख, आंखों, बांहों, जांघों, पैरों, पेटों वाला,
कांप रहा हूं, देख तेरा यह रूप बड़े दांतों वाला.

**11.24**

चौड़ा मुंह, वीशाल आंखें, नभ तक रंगीनी दमक रही,
धैरय, शानती हैं भंग, अंतरातमा भी डर से कांप रही.

**11.25**

मुंह में देख बड़े दांतों को, लपटों को, लगता है डर,
योगेशवर! सवामी जग के! आशरय दो! दया करो मुझ पर!

**11.26**

धरीतराषटर के सभी बेटे, भीषम, करण और दरोण के साथ,
राजाओं के समूह सारे, परधान योदधाओं के साथ;

**11.27**

घुसे जा रहे लमबे दांतों के मुंह में बेबस होकर,
वे दांतों में फंसे पड़े या चूर हो रहे हैं पीस कर.

**11.28**

जैसे वेगवती नदीयां सागर में मीलने को जातीं,
वैसे वीरों की टोली, लपटों वाले मुंह में आतीं.

**11.29**

जैसे जलती हुअी आग में, पतंग तेज़ी से जाते,
अुसी तरह योदधा वीनाश के लीये तेरे मुंह में आते.

**11.30**

अपने लपटों के मुख में, तू सब लोकों को नीगल रहा,
तेरी तेज भरी कीरणों से, सारा जग है झुलस रहा.

**11.31**

तू है कौन भयानक? शरेषठ देव! करता परणाम तुझ को,
कर दे करीपा, बता अपने को, तेरा कुछ न पता मुझ को.

**सापताहीक पाठ-34/11.32 योगेशवर ने कहा:**

मैं हूं काल वीनाशक, सब लोकों को मैं करता हूं नषट,
दोनों सेनाओं के योदधा, बीन तेरे भी होंगे नषट.

**11.33**

अुठकर जीत शतरुओं को, यश मीले, राजय पर शासन कर,
ये मुझ से मर चुके कीनतु, अरजुन, बन अीस का कारण भर.

**11.34**

भीषम, जयदरथ, दरोण, करण, अीन सारे योदधाओं को मार,
ये तो हैं वीनषट, मत डर, युदध में न होगी तेरी हार.

**11.35 संजय ने कहा:**

सुन कर अीन वचनों को अरजुन, हाथ जोड़ कुछ वीसमय से,
डर से कांप, रुंधी वाणी में, यूं बोला योगेशवर से.

**11.36 अरजुन ने कहा:**

जो तेरा यशगान कर रहे, आनंद का अनुभव करते.
राकशस डर कर भाग रहे हैं, सीदध तेरा आदर करते.

**11.37**

तू अनंत देवों का सवामी, बड़ा बरहम से भी है तू,
तू है अनसततीव, असततीव, परे अुस से जो भी, है तू.

**11.38**

तू ही आदी पुरुष, तू गयाता, तू ही गयेय, लकशय भी तू,
हे अनंत रूपों वाले! जो जग में वयापत, वही है तू.

**11.39**

वायु, वीनाशक, अगनी, वरुण, चनदरमा तुझे नमता हूं मैं,
तू ही पीता और पती सब का, नमसकार करता हूं मैं.

**11.40**

नमसकार आगे, पीछे से, सभी ओर तू ही तो है,
तेरी शकती असीम, रमा सब में, सब कुछ तू ही तो है.

11.41

बीन पहचाने तेरी महीमा, मान लीया साथी तुझ को,
अगयानता, परेम, लापरवाही से कहा सखा तुझ को.

11.42

खाते, सोते, और खेलते, तुझे नहीं सममान दीये,
हे योगेशवर! कशमा याचना करता हूं मैं, अैसी लीये.

11.43

तू है जगत पीता, गुरु आदरणीय, सभी को पूजय है तू,
कोअी नहीं तीन लोकों में तुझ सा, अती अनुपम है तू.

11.44

झुकता हूं परणाम करने, हे देव! कशमा कर दे मुझ को,
जैसे पीता, मीतर, परेमी करते नीज पुतर, मीतर, परीय को.

11.45

आनंदीत हूं देख रूप जो पहले कभी न देखा था,
कांप रहा भय से, अब दीखला रूप वही जो पहला था.

11.46

देखूं तुझ को कीरीटधारी, गदा, चकर को लीये हुये,
सहसर बांहों के सथान पर, चार भुजायें लीये हुये.

**सापताहीक पाठ-35/11.47 योगेशवर ने कहा:**

दीवय शकती से मैंने तुझ को, सरवपरथम दीखलाया है,
दरशन परम बरहम का पहले नहीं कीसी ने पाया है.

11.48

मनुज लोक में तेरे सीवा न कोअी देख सका अैस को,
वेद, यगय, तप, करीया, दान, वीदया से पा न सका अैस को.

11.49

घबरा नहीं, न हो वीमूढ़ तू, मेरा रूप भयानक देख,
भय को तयाग, मुदीत होकर, अब मेरे अनय रूप को देख.

**11.50 संजय ने कहा:**

यह कहकर योगेशवर ने अपना पहला ही रूप लीया,
सौमय रूप धारण कर, डरे हुये अरजुन को शानत कीया.

**11.51 अरजुन ने कहा:**

करीषण, तुझे अीनसान देख, मैं अभी होश में आया हूं,
अपनी साधारण हालत को फीर से वापीस लाया हूं.

**11.52 योगेशवर ने कहा:**

तूने देखा रूप, कठीनता से ही जीसे देख सकते,
अैसा रूप देखने को तो देव सदैव हैं तरसते.

11.53

जैसा रूप अभी देखा, अुसको न कोअी पहचान सके,
वेद, तपसया, दान, यगय दवारा असे न जान सके.

**11.54**

यदी कोअी बन जाये मेरा भकत, देख वह सकता है,
और बताअूं, अरजुन, मुझ में परवेश भी कर सकता है.

**11.55**

करम मुझे अरपीत कर, जो मेरी ही पूजा करता है,
हो आसकती-रहीत, शतरु-रहीत, मुझ तक वही पहुंचता है.

**अधयाय-12**

**भकती योग**

**सापताहीक पाठ-36/12.01 अरजुन ने कहा:**

कोअी पूजा करे तुमहारी, कोअी अवयकत को माने,
योगेशवर, बतलाओ, अीन दोनों में कौन अधीक जाने?

**12.02 योगेशवर ने कहा:**

मन को मुझ में लगा तथा नीषठा, शरदधा से ही समपूरण,
पूजा करते मेरी, वही योग में सब से ज़यादा पूरण.

**12.03**

जो करते पूजा अुस की जो अवीनाशी, कूटसथ, अचल,
नीराकार, सरववयापत, परे धयान के, अवयकत, और अटल;

**12.04**

अीनदरीयों को अपने वश में कर, समता से देखें सब को,
सब के हीत में आननदीत, वे भी तो परापत करें मुझ को.

**12.05**

जीन के वीचार अवयकत पर, अुन को अुपासना बहुत कठीन,
नीरगुण लकशय, देह वालों को, पाना होता बहुत कठीन.

**12.06**

पर जो लोग सभी करमों को मुझ पर हैं अरपीत करते,
भकती भाव से मेरा धयान करें, मेरी पूजा करते.

**12.07**

अपना मन मुझ पर केनदरीत कर, रखते हैं जो शुदध वीचार,
मरीतयु लोक के पापों से, मैं शीघर करूं अुन का अुदधार.

**12.08**

तन को वश में कर पहले, फीर अपना चीतत लगा मुझ में,
यह अभयास करे तो नीशचय ही तू वास करे मुझ में.

**12.09**

अरजुन, तन को वश में कर यदी तू मुझ में नहीं आ सकता,
गयान परापती का परयतन कर, जीस से तू मुझ को पा सकता.

**12.10**

यदी हो गयान कठीन, तो मेरे चीनतन का ही लकशय करे,

मुझ पर अपना धयान लगाता रहे, सीदधी को पराप्त करे.

**12.11**

यदी असमरथ अीसे भी करना, योग शरण जाना अचछा,
अपने को वश में कर के, तू तयाग करम-फल की अीचछा.

**12.12**

अभयास से गयान अुततम है, धयान, गयान से है अुततम,
जीस से शानती मीले, वह फल का तयाग, धयान से भी अुततम.

**12.13**

योगी सब का मीतर, करुण, धैरयवान, बैर नहीं रखता,
अहंकार, ममता से अूपर, समान सुख, दुख में रहता.

**12.14**

दरीढ़ नीशचय वाला, सनतुषट, रखे जो वश में अपने को,
करे समरपीत चीतत, बुदधी मुझ पर, वो परीय होता मुझ को.

**12.15**

जीस से जग घबराता नहीं, न जग से जो घबराता है,
हरष, अीरषया, भय, चीनता से मुकत, मुझे परीय होता है.

**12.16**

अुदासीन, अनपेकश, वयथा से दूर, दकश, जो नीरमल है,
तयाग दीये जीस ने सब करमारमभ, वही मुझ को परीय है.

**12.17**

परसननता, अीचछा, दुख, दवेष सभी से वीरकत जो होता,
भले-बुरे का तयागी, भकती करे मेरी, वो परीय होता.

**12.18**

शतरु, मीतर जीस को समान हैं, मान और अपमान समान,
नहीं लगाव कीसी से, सुख-दुख, सरदी-गरमी अेक समान.

**12.19**

जीसे परशंसा, नीनदा सम, जो मौन और सनतोषी है,
नीशचय नहीं नीवास सथल, मती अटल, भकत मुझ को परीय है.

**12.20**

शरदधा से जो मुझ को अपना अूंचा लकशय समझते हैं,
वही भकत मुझ को अती परीय, जो अमर गयान पर चलते हैं.

## अधयाय-13

## कशेतर कशेतरगय वीभाग योग

### सापताहीक पाठ-37/13.01 अरजुन ने कहा:

हे योगेशवर! यह बतलाओ, कया है परकरीती? पुरुष है कया?
कया हैं कशेतर और कशेतरगय? लकशय है गयान, गयेय का कया?

### 13.02 योगेशवर ने कहा:

अरजुन, भौतीक शरीर सब का, कशेतर यही कहलाता है,
जो अीस को जाने वह गयानी, कशेतरगय कहा जाता है.

**13.03**

सारे कशेतरों का कशेतरगय यहां केवल मुझ को ही जान,
कशेतर और अुस के गयानी का गयान, समझ ले सचचा गयान.

**13.04**

अब सुन कया है कशेतर, कीस तरह का, परीवरतन कया अुस में,
कैसे आया है, कीतना है, और शकतीयां कया अुस में.

**13.05**

रीषीयों के मनतरों में अीस का गान बहुत है कीया गया,
अीस का वरणन तरक-शासतर के सूतरों में भी बहुत हुआ.

**13.06**

पांच ततव, मती, अहंकार, अवयकत साथ जो है अुन के,
दस अीनदरीयां, संग अुन के चीत, पांच वीषय जो अीनदरीयों के.

**13.07**

सुख, दुख, अीचछा, दवेष, चेतना, धरीती व शरीर जहां रहते,
अुन के साथ वीकार अुनहीं के, समझो 'कशेतर' अुसे कहते.

**13.08**

सरवशरेषठ कहना न सवयम को, कशमा, अहींसा, वीनमरता,
गुरु-सेवा, शुदधता, सरलता, आतम-संयम अेवम दरीढ़ता;

**13.09**

वीषयों से वैरागय, अहम का तयाग, सभी दोषों का गयान,
जनम, मरीतयु, वरीदधावसथा, बीमारी, दुख, सब की पहचान;

**13.10**

अनासकती; सनतान, वधू, घर, सब से मोह नहीं करना;
अचछी बुरी सभी घटनाओं के परती भाव अेक रखना;

**13.11**

सदा अननय योग से पररीत, मुझ में अटल भकती रखना,
रहना अेकानत में, तथा जन-समुदाओं से भी बचना;

**13.12**

लीन हमेशा आतम-गयान में, परम सतय का करना धयान,
सचचा गयान यही, अीस से जो भीनन अुसे कहते अगयान.

**13.13**

करे अमरता परापत, गयान जो ले मुझ से अुस का शाशवत,
वह अनादी है, सत भी वही, अुसे कह सकते नहीं असत.

**13.14**

हाथ पैर सब जगह, आंख, सीर, मुख वह सभी जगह रखता,
चारों ओर कान अुस के, सब जग अुस में नीवास करता.

**13.15**

अुस में सभी अीनदरीयों के गुण, बीना अीनदरीयों के है वो,
अनासकत, सब को संभालता, गुण बीन भोग करे है वो.

**13.16**

वह सब के बाहर, अंदर भी, अचल और चलता भी है,
अितना छोटा, देख न पायें, बहुत दूर, वो पास भी है.

**13.17**

वह अविभकत, लगे विभकत, सब का पालन पोषण करता,
सब को विनषट कर के वह फिर से अुन को पैदा करता.

**13.18**

जयोति, अंधेरा दोनों अुस में, हर दिल में जानो अुस को,
गयान, गयान का विषय, गयान का लकशय, सभी मानो अुस को.

**13.19**

कशेतर, गयान, गयान के विषय का वरणन है संकशिपत कीया,
भकत मेरा जो अिस को समझे, अुस ने मुझ को परापत कीया.

**सापताहिक पाठ–38/13.20**

परकरिति, पुरुष दोनों अनादि हैं, अरजुन, तू अिस को ले जान,
रूप और गुण पैदा हुये परकरिति से, अिस को भी पहचान.

**13.21**

कारय, और अुस के साधन का कारण परकरिति बताते हैं,
आतमन को सुख–दुख के अनुभव का कारण बतलाते हैं.

**13.22**

पैदा हुये परकरिति दवारा गुण, भोग पुरुष का बनते हैं,
गुण ही जग में अचछे, बुरे जनम का कारण बनते हैं.

**13.23**

तन में सथित परमेशवर साकशी, अनुमति देने वाला है,
अुपभोगी, महान परभु, वह सब को संभालने वाला है.

**13.24**

जो भी गुण के साथ परकरिति, आतमा का भेद जान लेता,
कोअी भी वह करम करे, दोबारा जनम नहीं लेता.

**13.25**

कुछ परमातमा को निज मन से आतमन में देखें, कर धयान,
अनय, दिवय–दरशन पाने को करें करम या पायें गयान.

**13.26**

बहुत लोग अिस को न समझते, सुनने में आसथा रखते,
वे भी तो तर जाते हैं, जो सुन कर अुपासना करते.

**13.27**

हे अरजुन! तू समझ, चराचर जीव यहां पर जो होते,
कशेतर और कशेतरगय मिलन दवारा ही वे पैदा होते.

**13.28**

जो परमातमा को सब चीज़ों में निवास करता देखे,
केवल चीज़ नषट होतीं, परमातमा नहीं, अिसे देखे.

**13.29**

सभी रूप में विदयमान, ओशवर सब जगह निवास करे,
मन से आतमन को न कषट दे, तभी लकशय को पराप्त करे.

**13.30**

सारे करम परकरीती से होते, जो पराणी ओस को देखे,
वह जाने आतमा न करे कुछ, केवल करमों को देखे.

**13.31**

जो देखता ओसे की विविधता सब परभु में केनदरित होती,
ओुस से ही जग विसतरित होता, बरहम पराप्ती ओुस को होती.

**13.32**

आतमा निरगुण, अमर, अनशवर, यदयपि शरीर में होती,
फिर भी कोओी करम न करती, लिपत नहीं तन में होती.

**13.33**

जैसे आकाश सरववयापी, लिपत किसी वसतु में नहीं,
ओुसी तरह आतमा शरीर में सथित है, लेकिन लिपत नहीं.

**13.34**

अरजुन, जैसे सूरय परकाशित करता है सारे जग को,
ओुसी तरह सवामी कशेतरों का, करे परकाशित कशेतरों को.

**13.35**

फ़रक़ कशेतर, कशेतरगय बीच, तोड़ना परकरीती के बंधन को,
देखे जो गयान चकशु दवारा, पाये वही परम बरहम को.

## अधयाय-14

## गुणतरय विभाग योग

**सापताहिक पाठ-39/14.01 योगेशवर ने कहा:**

अरजुन, सुन ले अब वह गयान, जिसे सरवोततम बतलाते,
जिसे जान कर मुनिजन ओूपर ओुठते, परम सिदधी पाते.

**14.02**

ओिस गयान के सहारे मुझ को पाते, जनम नहीं लेते,
और परलय के आने पर वे बेबस दुखी नहीं होते.

**14.03**

बरहम विशाल गरभ सब का, मैं बीज डालता हूं ओुस में,
पराणी और वसतुयें सारी, पैदा होती हैं जिस में.

**14.04**

अरजुन, जहां कहीं भी रूप योनि से है पैदा होता,
बरहम समान योनि सब की, मैं पिता समान बीज बोता.

**14.05**

सतव, रजस, तम ये गुण तीन, परकरीती से पैदा होते हैं,
अरजुन, ये ही आतमा को शरीर से बांधे रखते हैं.

**14.06**

अिन में सतव वशुदध, परकाश, सवासथय होते अिस के कारण,
गयान और आननद से मनुज बंधता है अिस के कारण.

**14.07**

रजस है अनुरागातमक, जिस से आसकत, चाह पैदा है,
यह आतमन को आसकत से करम में जकड़े रहता है.

**14.08**

तमगुण में होता अगयान, सभी पराणी भरम में अिस से,
लापरवाही, आलस, नदरा में फंस जाते हैं जिस से.

**14.09**

सतगुण से आननद, रजोगुण से करमों को पा लेते,
कनतु तमोगुण से मत ढककर, पागलपन में ही रहते.

**सापताहिक पाठ–40/14.10**

कभी सतोगुण वजयी होता, रजगुण, तमगुण के अूपर,
कभी रजस वजयी सत, तम पर, या तम वजयी सत, रज पर.

**14.11**

शरीर के सब दवारों से जब गयान परकाश नकलता है,
तब यह समझा जा सकता है, वहां सतोगुण बढ़ता है.

**14.12**

लोभ, लालसा, अशानत, गतवध, अनुचत कारयों का परारमभ,
जब बढ़ता है रजोगुण तभी ये सब होते हैं आरमभ.

**14.13**

परकाश का अभाव, नषकरयता, लापरवाही व मूढ़ता,
जब चढ़ता है तमगुण, तब अिन का भी है परकोप बढ़ता.

**14.14**

जब सतगुण परधान, आतमा यद देह तयाग कर जाती है,
तब वह गयान से भरे शुदध लोक को सीधी जाती है.

**14.15**

जनम करमशीलों में ले, यद वह रजगुण में तन तयागे,
जनमे केवल मूढ़ योनयों में, यद तमगुण में तयागे.

**14.16**

सतगुण में करमों का फल सुखकर, जिस से मलता है गयान,
रजगुण में फल होता दुख, तमगुण में फल होता अगयान.

**14.17**

गयान सतोगुण से होता है, लोभ रजोगुण से होता,
पागलपन, पीड़ादायक अगयान, तमोगुण से होता.

**14.18**

रजगुण में बीच में रहें, सतगुण में जायें अूपर को,
तमगुण में जघनय करमों में लगकर, जायें नीचे को.

**सापताहिक पाठ–41/14.19**

जब दरीषटा, करमों का करता, तीन गुणों को ही माने,
गुण से परे कौन? यह जाने, मेरा सवरूप पहचाने.

**14.20**

गुण से अूपर अुठ कर जब, वह देह तयाग कर जाता है,
जनम, मरण, वरीदधावसथा, दुख से वीमुकत हो जाता है.

**14.21 अरजुन ने कहा:**

तीन गुणों से अूपर जो होता, हम पहचानें कैसे?
रहन-सहन कैसा अुस का? गुण से अूपर अुठता कैसे?

**14.22 योगेशवर ने कहा:**

जब परकाश, गतीवीधी या मोह रहें, वह माने बुरा नहीं,
जब वे नहीं रहें तब अुन के लीये कामना करे नहीं.

**14.23**

अुदासीन की भांती गुणों से हीले नहीं, नीशचल रहता,
गुण ही सारे करम करें, अीस को वह जान सुदरीढ़ रहता.

**14.24**

सुख, दुख हैं समान; मीटटी, सोना, पतथर हैं अेक समान;
मन है सथीर; परीय-अपरीय अेक हैं; नीनदा-सतुती हैं अेक समान,

**14.25**

मान और अपमान अेक से, मीतर, शतरु हैं अेक समान,
करम फलों का तयाग करे जो, अुस को गुणातीत ही जान.

**14.26**

अननय भकती योग से जो भी मेरी सेवा करता है,
तीन गुणों से अूपर अुठकर, बरहम योगय वह बनता है.

**14.27**

अजर, अनशवर, परम बरहम को पाने का साधन हूं मैं,
शाशवत धरम व परमाननद, सभी का पुनय धाम हूं मैं.

## अधयाय-15

## पुरुषोततम योग

**सापताहीक पाठ-42/15.01 योगेशवर ने कहा:**

जड़ अूपर, शाखायें नीचे, अशवतथ पेड़ कहलाता,
पतते अुस के वेद, अीसे जो समझे, वेदों का गयाता.

**15.02**

शाखायें सब ओर गुणों की, कलीयां वीषयों को कहते,
जड़ फैली हैं मनुज लोक तक, जीसमें सभी करम होते.

**15.03**

अिसका असली रूप न दीखे, यह बिन आदि, अंत, आधार,
दरिढ़ जड़ का अशवतथ पेड़ काटो, कर अनासकती का वार.

15.04

परापत करो तब अुस की शरण, रचा जिस ने सारा संसार,
खोजो तुम वह धाम जहां से, नहीं लौटते हैं अिस पार.

15.05

जो अभिमान, मोह से छूटे, अिचछाओं को शानत करे,
लगे मुकती में, सुख-दुख तयागे, परम धाम को परापत करे.

15.06

अुसे न सूरय परकाशित करता, चनदर और अगनि भी नहीं,
परम धाम है मेरा, वहां पहुंच कर, लौटे कभी नहीं.

15.07

मेरा अंश सनातन जीवातमा बन कर जग में रहता,
परकरिति में निहित अिनदरियों तथा मन को आकरषित करता.

15.08

जब अीशवर तन बनता, अुसे छोड़ता, आतमा संग जाती,
जैसे वायु सुगनधों को अुन के सथान से ले जाती.

15.09

कान, आंख, नासिका, तवचा, जिवहा, मन का अुपयोग करे,
अिन से सुख पाने के लिये, अिनदरि विषयों का भोग करे.

15.10

मिले गुणों से, भोग करे, तन में आये, तयागे तन को,
मूरख न देखे लेकिन गयान चकशु वाला देखे अुस को.

15.11

यतनशील योगी अपने में अुसे साधना से देखे,
मंद-बुदधि, अनियनतरित, यतन करे, पर अुसे नहीं देखे.

15.12

जो सारा संसार परकाशित करता, वह सूरज का तेज,
तेज अगनि का और चनदरमा का, सारे मेरे ही तेज.

15.13

परिथवी पर पराण शकति दवारा, जनम निरंतर लेता हूं,
रस से भरा चनदरमा बनकर, सब को पोषित करता हूं.

15.14

बन कर पाचक-अगनि यहां पराणी के तन में आता हूं,
पान, अपान वायु में मिलकर, चारों अनन पचाता हूं.

15.15

देता गयान, समरिति, विसमरिति, मैं सब के दिल में रहता हूं,
मैं ही गयान वेद का, मैं वेदानत, वेद का गयाता हूं.

15.16

नशवर और अनशवर दोनों रूप वयापत होते जग में,
नशवर से असतितव, अनशवर अंतरयामी है सब में.

15.17
अिन से भिनन और सरवोततम, जिसको परमातमा कहते,
जो तीनों लोकों का सवामी, जिस से सब पोषित होते.

15.18
मैं कशर से हूं परे, और मैं अकशर से भी ऊपर हूं,
अिसी लिये जग में, वेदों के अनदर, मैं पुरुषोततम हूं.

15.19
भरानति-रहित हो, पुरुषोततम को जाना, सब कुछ जान लिया,
पूरी तरह समझ लो, मेरी पूजा करना मान लिया.

15.20
हे अरजुन! अिस तरह बताया मैंने रहसयपूरण यह गयान,
होते सब अिस से करितारथ, अिस से बन जाते हैं विदवान.

अधयाय-16

देवासुर समपदा योग

सापताहिक पाठ-43/16.01 योगेशवर ने कहा:
निरभयता, मन की निरमलता, विदया-परापति, योग-रुचि, दान,
आतम-नियनतरण, सीधापन, तप, यगय, शासतर का सचचा गयान;

16.02
सतय, अहिंसा, करोध-नियनतरण, शानति, दोष से विरकतता,
दया, लोभ से मुकति, मरिदुलता, लजजा, तयाग, अचंचलता;

16.03
दवेष-हीनता, तेज, कशमा, धरिति, पवितरता और नमरता;
ये गुण अुस के जो दैवी सवभाव लेकर पैदा होता.

16.04
कठोरता, पाखंड, अकड़पन, करोध, घमंड और अगयान,
अिन को ले जो पैदा हुआ, अुसे आसुरी परकिरति का मान.

16.05
बनधन मिले आसुरी गुण से, दैवी गुण से मोकश मिले,
अरजुन, दुखी न हो, तू पैदा हुआ समपदा दैवी ले.

सापताहिक पाठ-44/16.06
दैवी और आसुरी, दो परकार के पराणी होते हैं,
दैवी तो सुन लिये, सुनो अब कौन आसुरी होते हैं.

16.07
नहीं तयाग का गयान अुनहें, करमों का गयान नहीं होता,
पवितरता या सदाचार या सतय, नहीं अुन में होता.

16.08
वे कहते जग असतय, बिन सवामी, बुनियाद नहीं कोअी,

जग का नीयमीत कारण था नैतीक आधार नहीं कोओी.

16.09

अलप बुदधी, भरषटातमा, कटटर दरीषटीकोण यह अपनाते,
बनकर शतरु जगत के, अीस का वीनाश करने को आते.

16.10

अहंकार, अभीमान से भरे, पाखंडी, अीचछा रखते,
मूरख, ग़लत दरीषटीकोण वाले, नीशचय बीना करम करते.

16.11

दबे हुये चीनताओं से वे, अुन का अंत मौत में है,
अीचछा-तरीपती लकशय केवल, वे समझें, सब कुछ अीस में है.

16.12

फंसे लालसा के फनदों में, दबे वासना में रहते,
भोग के लीये ही वे ढेरों समपती अेकतरीत करते.

16.13

मैंने सभी पा लीया, मैं सब अीचछा पूरी कर लूंगा,
यह मेरा है, वह भी मेरा होगा, मैं सब कुछ लूंगा;

16.14

अीस को मार दीया है मैंने, अुसको भी मारूंगा मैं,
मैं ओीशवर, अुपभोकता, सफल, सुखी, बलवान सभी कुछ मैं;

16.15

मैं धनवान, अुचच कुल का, मैं यगय करूंगा, दूंगा दान,
मैं आननद मनाअूंगा – यह कहते मूरख और अगयान.

16.16

अैसे भरानत वीचारों से, वे मोह जाल में फंसते हैं,
करते रहते तरपत कामना, बुरे नरक में गीरते हैं.

16.17

अभीमानी, अकड़ू, धन के, मान के, नशे में रहते हैं,
पाखंडी, बस दीखलाने को, यगय, रीती बीन करते हैं.

16.18

दवेष, अहम, बल, घमंड, काम, करोध के वश में वे रहते,
मैं जो सब के अनदर बसता, नफ़रत वे मुझ से करते.

16.19

नीच, करूर, वैर से भरे वे, काम बुरे करते जाते,
बार-बार, आसुरी योनी में, अीसी लीये फेंके जाते.

16.20

मूरख, पहुंच आसुरी योनी में, जनम कओी लेकर भी वे,
परापत नहीं कर पाते मुझ को, गीरे हमेशा रहते वे.

16.21

तीन तरह के दवार नरक के, करें नाश वो आतमन का,

काम, करोध, लोभ से बने हैं, तयाग करो अिन तीनों का.

**16.22**

तीन दवार से अनधकार में जाने से जो है बचता,
कलयाणी करमों को करता, अूंचा लकशय परापत करता.

**16.23**

छोड़ शासतर नियमों को, जो अपनी अिचछा से करम करे,
अुसे न होते परापत सिदधी, सुख, न वो पुनय-फल परापत करे.

**16.24**

कया करना है, कया नहीं करना, शासतरों से निरधारित कर,
शासतर नियम को जान, अुनहीं का नितय जगत में पालन कर.

## अधयाय-17

## शरदधातरय विभाग योग

**सापताहिक पाठ-45/17.01 अरजुन ने कहा:**

यगय करें शरदधा से, बिना शासतर, अुन की कया गति होती?
सतव, रजस, तम गुण में करते, कैसी वह शरदधा होती?

**17.02 योगेशवर ने कहा:**

देहधारियों की शरदधा, जैसा सवभाव वैसी होती,
वह सातविक, राजसिक, तामसिक, गुण जैसा, वैसी होती.

**17.03**

हर पराणी की शरदधा अुस के सवभाव जैसी ही होती,
सवभाव के अनुकूल, गुणों पर आधारित शरदधा होती.

**17.04**

सातविक पूजें देव, राजसिक पूजें यकश, राकशसों को,
जो होते तामसिक, पूजते भूत, परेत, आतमाओं को.

**17.05**

यदि करते वे अुगर तपों को, शासतरों दवारा जो वरजित,
अहंकार से पूरण, घमंडी, काम, राग से हैं पररित;

**17.06**

मूरख, आसुरी, वे तन के ततवों को बहुत सताते हैं,
मैं जो अुन के अनदर हूं, मुझ को भी दुख पहुंचाते हैं.

**17.07**

भोजन सब को परिय होता है, तीन तरह का अुस को जान,
यगय, दान, तप तीन तरह के, सुन ले अुन की भी पहचान.

**17.08**

आयु, पराण, बल, सेहत, सुख, अुमंग जो भोज बढ़ाते हैं,
मीठे, चिकने, रुचिकर, पोषक, वे सातविक कहलाते हैं.

**17.09**

जो तीखे, खटटे, नमकीन, गरम, मिरचीले, रूखे हैं,
पैदा करें शोक, दुख, रोग, जलन, वो भोज राजसिक हैं.

**17.10**

जो भोजन बिगड़ा हो, जिस में सवाद न हो, जो बासा हो,
सड़ा हुआ, जूठा, गंदा हो, उसे तामसिक भोज कहो.

**17.11**

फल-इच्छा बिन करो, किन्तु विशवास यही, करतवय है यगय,
शासतर नियम अनुकूल करो जो, कहलाता है सातविक यगय.

**17.12**

हे अरजुन! जो यगय किसी फल की आशा से हैं करते,
वह राजसिक यगय है, उस को बस दिखलावे को करते.

**17.13**

अनन न बांटे, न दे दकशिणा, नियम बिना, बिन मनतर करे,
ऐसा यगय तामसिक होता, बिन शरदधा के जैसे करे.

**सापताहिक पाठ-46/17.14**

देव, बराहमणों, गुरुओं, विदवानों का आदर, पवितरता,
सतय, अहिंसा, बरहमचरय, यह तो शरीर का तप होता.

**17.15**

शबद कहे जो बुरा न हो, सचचा हो, परिय, हितकारी हो,
पाठ करे वेदों का नियमित, यह तो वाणी का तप हो.

**17.16**

जिस से मौन, परसनन, तरिपत हो, पूरण आतम-संयम होता,
भावों की पवितरता जिस से, वही मानसिक तप होता.

**17.17**

तीन तरह का तप करने में, अगर संतुलित मन होता,
फल-इच्छा के बिना करे शरदधा से, सातविक तप होता.

**17.18**

जो आदर करने, पूजा के समय, दिखावे को होता,
उसे राजसिक तप कहते, वह कचचा, पल भर को होता.

**17.19**

जिस तप दवारा हठी, मूरखता भरे लोग दुख को सहते,
या औरों की हानि के लिये करें, तामसिक तप कहते.

**17.20**

जिसे योगय वयकति को, बिना फल-इचछा, करम समझ करते,
उचित जगह पर, उचित समय पर दिया दान, सातविक कहते.

**17.21**

दान, जिसे फल की इचछा या लाभ पराप्ति को करते हैं,
जिस में होता कलेश, उसी को दान राजसिक कहते हैं.

**17.22**

ग़लत जगह या ग़लत समय पर दान अयोगय वयकति को दो,
समारोह बिन, तिरसकार से दिया दान, तामसिक कहो.

17.23
ओम, तत, सत ये तीन शबद, संकेत बरहम का करते हैं,
अीन से पूजा, वेद-पाठ, यगयों के वीधान होते हैं.

17.24
यगय, दान, तप में सब करम, शासतर अनुकूल जीनहें करते,
शुभारमभ अुन का बरहमवादी, 'ओम' शबद से ही करते.

17.25
यगय, दान, तप के अुन सारे करमों को 'तत' कहते हैं,
जीन को, मोकश चाहने वाले, फल-अीचछा बीन करते हैं.

17.26
'सत' का अुपयोग अचछाअी, यथारथ दरशाने को होता,
परशंसनीय कारय करने को भी अीस का परयोग होता.

17.27
यगय, दान, तप में दरीढ़ हो, नीशचय करना, सत कहलाता,
अीसी तरह का नीशचय, अनय करम में भी सत कहलाता.

17.28
यगय, दान, तप, करम, बीना शरदधा के कीया, असत होता,
लोक और परलोक कहीं भी, अीस से लाभ नहीं होता.

**अधयाय-18**

**मोकश सनयास योग**

**सापताहीक पाठ-47/18.01 अरजुन ने कहा:**

हे योगेशवर! तयाग और सनयास गयान की चाह मुझे;
दोनों अलग-अलग बतलाओ; कया सचचा? दो गयान मुझे.

**18.02 योगेशवर ने कहा:**

कहते हैं, सनयास, कामना से परेरीत करमों का तयाग,
सब करमों के फल को तज देना भी, कहते, सचचा तयाग.

18.03
कुछ कहते हैं, दोष मान करमों को, अुन का तयाग करो,
अनय कहें, तप, दान, यगय के करमों का मत तयाग करो.

18.04
हे अरजुन! अब तू मुझ से सुन, सतय रूप में कया है तयाग,
बुदधीमान, वीदवान बताते, तीन तरह का होता तयाग.

18.05
यगय, दान, तप के करमों को करो, न अुन का तयाग करो,
बुदधीमान बन कर अपने जीवन को अुन से शुदध करो.

18.06
नीरासकत हो करम करो, करमों के फल का तयाग करो,
हे अरजुन! यह मेरा नीशचीत मत है, अीस पर धयान करो.

**18.07**

नीत करने के योगय करम का तयाग, अुचीत न कहा जाता,
अीस परकार का अगयानी का तयाग, तामसीक कहलाता.

**18.08**

कषट और दैहीक दुख के भय से जो करम तयाग करता,
वह राजसीक तयाग है, अुस से नहीं तयाग का फल मीलता.

**18.09**

नीयमीत करमों को जब कोअी, अुचीत समझ, करता जाता,
अनासकत हो तयागे फल, वह सातवीक तयाग कहा जाता.

**18.10**

गयानी होता सातवीक तयागी, फल से अुसे लगाव नहीं,
घरीणा नहीं है अपरीय करम से, परीय से कुछ अनुराग नहीं.

**18.11**

समभव नहीं, देहधारी कर दे करमों का पूरा तयाग,
कीनतु करम के फल को तयागे, वह भी तो होता है तयाग.

**18.12**

करमों का परीय, अपरीय और मीशरीत फल मरीतयु बाद मीलता,
जीस ने तयागा करमों को, अुस को न कहीं भी फल मीलता.

**सापताहीक पाठ–48/18.13**

हे अरजुन! अब तू मुझ से करमों के अुपकरणों को जान,
ये आवशयक, पांच तरह के, सांखय योग में अीनका गयान.

**18.14**

करम–भूमी, करता, अुस के संग साधन सभी अीनदरीयों के,
वीवीध करम, दैवी अीचछा, ये पांच अुपकरण करमों के.

**18.15**

जब मनुषय अपने शरीर, वाणी, मन से कुछ भी करते,
करम अुचीत हो या अनुचीत, पांचों अुपकरण सदा रहते.

**18.16**

मूरख वयकती केवल अपने को करमों का करता माने,
अुस की बुदधी अशीकशीत होती, सचची बात नहीं जाने.

**18.17**

जो हो अहंकार से मुकत, बुदधी जीस की हो मलीन नहीं,
वह मनुषय सब को मारे, फीर भी बंधन में पड़े नहीं.

**18.18**

गयान, गयेय, गयाता ये तीनों, करमों को परेरीत करते,
करण, करम, करता ये तीनों, करमों का संगरह करते.

**18.19**

गयान, करम, करता के अरथ, बताता है गुण का वीगयान,
तीन तरह के होते हैं, अीन को भी ठीक तरह से जान.

**18.20**

जिससे सभी प्राणियों में देखे यथारथता एक महान,
विभक्तता में देखे सतता एक, वही है सातविक ग्यान.

**18.21**

जिस के कारण जग के प्राणी, नहीं दीखते एक समान,
दीखे असतितव की विविधता, कहते उसे राजसिक ग्यान.

**18.22**

जिस से एक कारय ही जाने, कारण का कुछ धयान न हो,
ततव अरथ कया? ऐसे न समझे, उसे तामसिक ग्यान कहो.

**18.23**

तयाग फलों की इचछा, नियमित करम जिनहें ग्यानी करते,
राग, दवेष से परे करम जो, सातविक करम उनहें कहते.

**18.24**

फल की आशा लिये, अहम के भावों से जो प्रेरित हो,
जिन में कठिन परिशरम होता, उनहें राजसिक करम कहो.

**18.25**

ग्यात न हो परिणाम और पौरुष का जिस में धयान न हो,
हिंसा, हानि हो सके जिस से, उसे तामसिक करम कहो.

**18.26**

सिदधि, असिदधि से सदा अविकल, मुकत अहम से जो होता,
धैरय और उतसाह से भरा, वह सातविक करता होता.

**18.27**

लोभी, हिंसक, रागी, करम-फलों को उतसुक जो होता,
हरष, शोक से विकल, अशुदध, राजसिक करता वह होता.

**18.28**

धोखेबाज़, हठी, असभय, दवेषी जो काम टालता हो,
दुखी, आलसी, असनतुलित, उस करता को तामसिक कहो.

**सापताहिक पाठ-49/18.29**

हे अरजुन! गुण पर आधारित भेद बुदधि, धरिति के होते,
पूरी तरह बताता हूं, ये तीनों अलग-अलग होते.

**18.30**

करम, अकरम; अभय,भयभीत; करें कया, कया न करें, हैं कया?
सातविक बुदधि समझती सब को, बंधन और मुकति हैं कया?

**18.31**

जिस से कया करना है, कया नहीं करना, इस का ग्यान न हो,
धरम, अधरम सही नहीं जाने, उसे राजसिक बुदधि कहो.

**18.32**

जिस के कारण अंधकार फैले, अधरम को धरम कहो,
जिससे सब कुछ उलटा दीखे, उसे तामसिक बुदधि कहो.

**18.33**
वह अविचल धरिति जिस से मन को, पराणों और इनदरियों को,
हो ऐकागर करा ले वश में, सातविक कहते उस धरिति को.

**18.34**
जिस के दवारा धन, करतवय, सुखों के संग चिपके रहते,
फल की इचछा करते रहते, उसे राजसिक धरिति कहते.

**18.35**
जिस से विषाद, निदरा, भय, अभिमान, शोक नहीं तज सकते,
सदैव मूरख बने रहते हैं, उसे तामसिक धरिति कहते.

**18.36**
गुण पर ही आधारित जानो, तीन तरह के सुख होते,
अभयास से इनहें जाने जो, दूर उसी के दुख होते.

**18.37**
जो कड़वा होता पहले, पर मीठा होता है परिणाम,
आतम-गयान से जो पैदा हो, सातविक है उस सुख का नाम.

**18.38**
जो मीठा पहले, पर होता कड़वा अंत, जिसे सहते,
इनदरि सुखों पर जो आधारित, उसे राजसिक सुख कहते.

**18.39**
जिससे पहले और अंत में, सिरफ़ मोह पैदा होता,
आलस, नींद, परमाद बढ़ाये, वही तामसिक सुख होता.

**सापताहिक पाठ-50/18.40**
इस परिथवी पर और सवरग में, कोई नर या देव नहीं,
परकरिति से बने तीन गुणों से, जिस का जीवन बंधा नहीं.

**18.41**
बराहमण, कशतरिय, वैशय, शूदर, इन सब की गतिविधियां होतीं,
गुण से नियमित सवभाव के कारण ही अलग-अलग होतीं.

**18.42**
शम, दम, तप, पवितरता, कशमा, सचाई, तरकपूरणता, गयान,
आसतिकता, धारमिकता, इन करमों से बराहमण की पहचान.

**18.43**
तेज, धीरता, सूझ-बूझ, वीरता, युदध में डट जाना,
ये कशतरिय के करम, करे नेतरितव, दान का भी करना.

**18.44**
करिषि, पशुपालन और तिजारत, ये करतवय वैशय के हैं,
सेवा करना सब की, सवाभाविक करतवय शूदर के हैं.

**18.45**
अपने करमों में लग कर ही, वयकति पराप्त करता है सिदधि,
अरजुन, अब समझाता हूं, किस तरह पराप्त होती है सिदधि.

**18.46**

वयापत हुआ है जो सब में, जो सब पराणी पैदा करता
अुस की पूजा करतवयों दवारा कर, सीदधी परापत करता.

**18.47**

अपना धरम अपूरण, अनय के पूरण धरम से अचछा है,
नीज सवभाव के करमों को करने से पाप न लगता है.

**18.48**

नीज सवभाव के करम न तयागो, चाहे अुन में दोष रहे,
जैसे आग ढकी धूंअे से, दोष करम को ढके रहे.

**18.49**

जो है अनासकत, अपने वश में, अीचछा भी बची नहीं,
वह सनयासी वहां पहुंचता, जहां करम है शेष नहीं.

**सापताहीक पाठ-51/18.50**

हे अरजुन! अब तू सुन, सीदधी परापत कर लेने पर कैसे,
गयान अुचचतम अैसा मीलता, बरहम-गयान होता जैसे.

**18.51**

बुदधी शुदध कर ले पहले वह, अपने को संयम में कर,
शबद, अनय वीषयों का तयाग करे, वह राग, दवेष तज कर.

**18.52**

रहे अकेला, अलपाहारी, तन, मन, वचन संयमीत हो,
सदा धयान में लीन, अुसे वैरागी जीवन में रुची हो.

**18.53**

अहंकार, बल, काम, करोध, अभीमान और समपती तयागे,
शानत चीतत हो, बरहम परापती के योगय बने, ममता तयागे.

**18.54**

होकर अेकाकार बरहम में, समान सब को अपनाता,
कोअी शोक न कोअी अीचछा, अुचच भकती मेरी पाता.

**18.55**

मैं हूं कौन और कैसा हूं, अीस का गयान भकत करता,
ततव रूप में मुझे जान कर, वो परवेश मुझ में करता.

**18.56**

आकर मेरी शरण भकती से, जो सब करम यहां करता,
अुस पर मेरी करीपा नीरनतर, वह आननद परापत करता.

**18.57**

मन से अपने तन के सब करमों को मुझ पर अरपीत कर,
कर अभयास, बुदधी को सथीर कर, लगा वीचारों को मुझ पर.

**18.58**

बुदधी सथीर होगी मुझ में तो सब दुख से तर जायेगा,
नहीं सुनी यदी अहंकार में, तू वीनषट हो जायेगा.

18.59
अहंकार के वश में 'नहीं करूंगा युदध' कहे अिस को,
अैसा कहना वयरथ, करेगी वीवश परकरीती यह करने को.

18.60
हे अरजुन! भरम के कारण यदी नहीं चाहता करना तू,
चाह न होते भी सवभाव से होकर वीवश, करेगा तू.

18.61
अीशवर सभी पराणीयों के हरीदयों में आ बस जाता है,
अुन के सारे अंगों को, यनतरों की भांती चलाता है.

18.62
कर अुस को अरपीत अपना असतीतव, शरण में जायेगा,
अुस की करीपा रहेगी, जीस से सदा शानती, सुख पायेगा.

18.63
भेद भरे ये गूढ़ गयान, मैंने तुझ को हैं बतलाये,
कर वीचार अीन पर, फीर कर तू जो तेरे मन को भाये.

सापताहीक पाठ-52/18.64
अब अुन वचनों को सुन, जीन में परम रहसय गूढ़तर है,
तू मुझ को परीय है, तुझ को बतलाता हूं, कथा हीतकर है.

18.65
मन को मुझ में लगा, भकत बन, मेरे लीये यगय कर तू,
नीशचय ही मुझ तक पहुंचेगा, सब से अधीक मुझे परीय तू.

18.66
सब धरमों को तयाग, अगर तू मेरी शरण चला आये,
दूर करूं तेरे सब पापों को, सब दुख से बच जाये.

18.67
अैसा गयान अुसे मत देना, जो न सुने, जो भकत न हो,
मेरी नीनदा करता हो, तप की, सेवा की शकती न हो.

18.68
जो मेरे अीस गूढ़ गयान को, भकतों को सीखलाता है,
मुझ तक पहुंचेगा अवशय, वह भी तो भकती दीखाता है.

18.69
अुस से बढ़कर भकत कोअी भी, मेरे लीये नहीं होगा,
दुनीया में अुस से ज़यादा, कोअी न मुझे पयारा होगा.

18.70
यह पवीतर संवाद, धयान देकर जब कोअी भी सुनता,
मैं समझूं, वह गयान यगय से, मेरी ही पूजा करता.

18.71
जो कोअी शरदधा से, यह संवाद, दवेष बीन, सुना करे,
मुकती परापत कर, परम पुनय के दीवय लोक को परापत करे.

**18.72**

हे अरजुन! जो कहा, अुसे है सुना धयान से, कया तूने?
अपना भरम, अगयान से भरा, मीटा दीया है, कया तूने?

**18.73 अरजुन ने कहा:**

हे योगेशवर! नषट हुआ भरम, याद लौट आअी मेरी,
दूर हुआ संदेह, सथीर हूं, आगया मानूंगा तेरी.

**18.74 संजय ने कहा:**

मैंने सुना करीषण, अरजुन का यह संवाद धयान देकर,
मेरे सभी रोंगटे खड़े हो गये हैं, अीस को सुन कर.

**18.75**

यह तो करीपा वयास की, जीस से अीतना गहरा गयान सुना,
योगेशवर के दवारा ही यह दीया गया अुपदेश सुना.

**18.76**

यह संवाद करीषण, अरजुन का, याद मुझे जब आया है,
पुलकीत होकर तब मैंने आननद बहुत ही पाया है.

**18.77**

योगेशवर का अदभुत रूप, याद जब भी मुझ को आता,
होता है आशचरय मुझे, मन मेरा हरषीत हो जाता.

**18.78**

जहां करीषण योगेशवर और धनुरधारी अरजुन होंगे,
वहां नीती, कलयाण, वीजय, शरी, अवशय ही रहते होंगे.

# भागवद गीता का साप्ताहिक पाठ

सप्ताह 1 - 1-01 से 1-19 तक
सप्ताह 2 - 1-20 से 1-27 तक
सप्ताह 3 - 1-28 से 1-47 तक
सप्ताह 4 - 2-01 से 2-09 तक
सप्ताह 5 - 2-10 से 2-30 तक
सप्ताह 6 - 2-31 से 2-38 तक
सप्ताह 7 - 2-39 से 2-53 तक
सप्ताह 8 - 2-54 से 2-72 तक
सप्ताह 9 - 3-01 से 3-16 तक
सप्ताह 10 - 3-17 से 3-35 तक
सप्ताह 11 - 3-36 से 3-43 तक
सप्ताह 12 - 4-01 से 4-12 तक
सप्ताह 13 - 4-13 से 4-24 तक
सप्ताह 14 - 4-25 से 4-32 तक
सप्ताह 15 - 4-33 से 4-42 तक
सप्ताह 16 - 5-01 से 5-15 तक
सप्ताह 17 - 5-16 से 5-29 तक
सप्ताह 18 - 6-01 से 6-18 तक
सप्ताह 19 - 6-19 से 6-36 तक
सप्ताह 20 - 6-37 से 6-47 तक
सप्ताह 21 - 7-01 से 7-11 तक
सप्ताह 22 - 7-12 से 7-19 तक
सप्ताह 23 - 7-20 से 7-30 तक
सप्ताह 24 - 8-01 से 8-10 तक
सप्ताह 25 - 8-11 से 8-28 तक
सप्ताह 26 - 9-01 से 9-15 तक

सप्ताह 27 - 9-16 से 9-34 तक
सप्ताह 28 - 10-01 से 10-11 तक
सप्ताह 29 - 10-12 से 10-18 तक
सप्ताह 30 - 10-19 से 10-32 तक
सप्ताह 31 - 10-33 से 10-42 तक
सप्ताह 32 - 11-01 से 11-14 तक
सप्ताह 33 - 11-15 से 11-31 तक
सप्ताह 34 - 11-32 से 11-46 तक
सप्ताह 35 - 11-47 से 11-55 तक
सप्ताह 36 - 12-01 से 12-20 तक
सप्ताह 37 - 13-01 से 13-19 तक
सप्ताह 38 - 13-20 से 13-35 तक
सप्ताह 39 - 14-01 से 14-09 तक
सप्ताह 40 - 14-10 से 14-18 तक
सप्ताह 41 - 14-19 से 14-27 तक
सप्ताह 42 - 15-01 से 15-20 तक
सप्ताह 43 - 16-01 से 16-05 तक
सप्ताह 44 - 16-06 से 16-24 तक
सप्ताह 45 - 17-01 से 17-13 तक
सप्ताह 46 - 17-14 से 17-28 तक
सप्ताह 47 - 18-01 से 18-12 तक
सप्ताह 48 - 18-13 से 18-28 तक
सप्ताह 49 - 18-29 से 18-39 तक
सप्ताह 50 - 18-40 से 18-49 तक
सप्ताह 51 - 18-50 से 18-63 तक
सप्ताह 52 - 18-64 से 18-78 तक